04 - जलकुंभी से भरी नदी में: संवेदनाओं और सरोकारों...

05 - लोक कला, चौक पुरना और उसके विविध रूप

06 - संत रविदासः भक्ति कर्मयोग और राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत...

07 - बड़ा क्यों नहीं हो रहा, बच्चों का सिनेमा

A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 1 फरवरी, 2026
भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 23, अंक 152, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subhsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

जलदर्पण...

फोटो–जगदीश कौशल

सुप्रभात

कोई जहाज नहीं
किताब की तरह
दूर देशों की यात्रा पर
जो ले जा सके
न कोई तेज़ दौड़ने
वाला अश्व
जीवंत कविता वाले
किसी पन्ने की तरह–
सबसे निर्धन व्यक्ति भी
कर सकता है यात्रा
बिना किसी बोझ
या परेशानी के –
कितना किफायती
है यह रथ
जो मनुष्य की आत्मा
को जगह देता है।

– एमिली डिकिन्सन

अनुवाद : मणि मोहन

आम बजट आज

● मिडिल क्लास को बड़ी उम्मीदें

नई दिल्ली (एजेंसी)। कल 1 फरवरी को पेश होने वाला आम बजट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सरकार के मौजूदा कार्यकाल का एक अहम बजट माना जा रहा है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण कल सुबह 11 बजे संसद में ये बजट पेश करेंगी। पिछले साल का बजट एक लोकप्रिय बजट माना जाता है जिसमे मिडिल क्लास को बड़ी राहत मिली थी। इस बजट में इनकम टैक्स में छूट, सैलरीड क्लास के लिए स्टैंडर्ड डिडक्शन, किसान क्रेडिट कार्ड की लिमिट बढ़ाने, सस्ती दवाओं और इंश्योरेंस सेक्टर में सुधार जैसे बड़े फैसले लिए गए थे। इस साल सरकार का ध्यान अर्थव्यवस्था पर है। बता दें कि भारतीय शेयर बाजार में भी कल आम दिनों की तरह ही कारोबार होगा। बजट के चलते नेशनल स्टॉक एक्सचेंज और बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज 1 फरवरी 2026 को रविवार को खुला रहेगा। इंडस्ट्री के तमाम स्टेकहोल्डर्स सरकार के साथ अपनी अपेक्षाएं साझा कर रहे हैं।

● टैक्स कट, डिफेंस और हेल्थकेयर में हो सकती है राहत की बारिश

● **सिगरेट, पान मसाला और तंबाकू होंगे महंगे–** आज 1 फरवरी 2026 से पान–मसाला, सिगरेट और तंबाकू प्रोडक्ट का सेवन आपकी जेब पर भारी पड़ने वाला है। सरकार इन प्रोडक्ट पर टैक्स बढ़ाने की तैयारी में है, जिसके चलते इनकी कीमतों में उछाल आना तय है। यह अतिरिक्त बोझ सामान्य जीएसटी से अलग होगा। इसमें मुख्य रूप से उत्पाद शुल्क और उपकर में वृद्धि की जाएगी, जिससे इन प्रोडक्ट की लागत बढ़ जाएगी। एचडीएफसी या आईसीआईसीआई बैंक भी अपने क्रेडिट कार्ड से जुड़े कुछ नियम 1 फरवरी से बदल रहे हैं। एचडीएफसी इनफिनिया मेटल क्रेडिट कार्ड यूजर्स अब रिवॉर्ड पॉइंट्स को महीने में अधिकतम पांच बार रिडीम कर पाएंगे। आईसीआईसीआई बैंक अपने कुछ खास क्रेडिट कार्ड पर छूट देगा।

बजट में सस्ते इलाज पर भी हो फोकस

आगामी यूनियन बजट 2026–27 के लिए हेल्थ सेक्टर ने सरकार से कुछ खास उम्मीदें लगाई हैं। वे चाहते हैं कि सरकार देश के बड़े लक्ष्यों और आम लोगों के लिए इलाज को सस्ता बनाने के बीच की खाई को पाटे। हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. पी. सेंथिलनाथन ने कहा कि आने वाले साल के लिए जो योजना बने, वह लंबी अवधि की सोच पर आधारित होनी चाहिए। हेल्थ सेक्टर चाहता है कि सरकार डिजिटल तकनीकों को अपनाने पर जोर दे।

किसानों के कल्याण के लिए मिशन मोड में करें काम : मुख्यमंत्री यादव

सीएम ने कलेक्टरों को दिए टास्क, कहा– प्राकृतिक खेती अपनाने जागरुक करें, हार्टिकल्चर को भी बढ़ावा देना है

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि जो हम सबके अन्नदाता हैं, उनके दुख-दर्द की चिंता करना हमारा कर्तव्य है। किसानों का समग्र कल्याण राज्य सरकार की प्राथमिकता है। यह सरकार के लिए एक मिशन है। सरकार ने वर्ष 2026 को कृषक कल्याण वर्ष घोषित किया है। किसानों का जीवन संवारने और इनकी बेहतरी के लिए पूर्ण समर्पित भाव से मिशन मोड में कृषक कल्याण वर्ष का बेहद प्रभावकारी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से प्रदेश के सभी कमिश्नर्स-कलेक्टर्स को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कृषक कल्याण वर्ष के दौरान किसानों के जीवन में खुशहाली लाने के लिए विशेष प्रयास किए जाएं। किसान रथ चलाये जाएं। इनका शुभारंभ स्थानीय सांसद/विधायक एवं अन्य जनप्रतिनिधियों से ही कराएं। उन्होंने कहा कि कृषक कल्याण वर्ष में किसानों से विभिन्न स्थानों पर को निरंतर संवाद करें। उन्हें ग्रीष्मकालीन मूंग के स्थान पर अधिकाधिक रकबे/मात्रा में मूंगफली और उड़द की फसल लेने के लिए प्रोत्साहित करें। प्राकृतिक एवं जैविक खेती को प्रोत्साहित करें। जलवायु, ऊर्जा एवं सतत् कृषि को बढ़ावा देने के लिए ई-विकास पोर्टल एवं किसानों को संतुलित मात्रा में भी उर्वरकों का उपयोग के लिए जागरूक किया जाए। आकांक्षी जिलों में चल रही प्रधानमंत्री धन-धान्य योजना से अधिकाधिक किसानों को लाभान्वित किया जाए। दलहनी और तिलहनी फसलों का उत्पादन क्षेत्र बढ़ाने के लिए व्यापक प्रचार-प्रसार करें।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कृषक कल्याण वर्ष में कृषि आधारित उद्योगों के विकास के लिए हर जरूरी प्रयास किए जाएं। कृषि से जुड़े विभागों और इस क्षेत्र में प्रगतिशील स्वयं सेवी संगठनों एवं संस्थाओं के साथ मिलकर किसानों के कल्याण के लिए सरकार हर जरूरी कदम उठा रही है। उन्होंने कहा कि कृषक कल्याण वर्ष मनाने में किसान कल्याण एवं कृषि विकास के नेतृत्व में उद्यानिकी एवं खाद्य प्रसंस्करण, पशुपालन एवं डेयरी, मत्स्य पालन, जल संसाधन, सहकारिता, ऊर्जा, राजस्व, वन, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, कुटीर एवं ग्रामोद्योग सहित 15 से अधिक विभाग सक्रिय भूमिका निभायेंगे।

दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के लिए करें समन्वित प्रयास पशुपालकों के लिए तैयार हो रहा एक ऐप

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी कलेक्टर्स से कहा कि वे अपने जिले में दुग्ध उत्पादन में वृद्धि के लिए समन्वित प्रयास करें। पशुपालकों को नस्ल सुधार, पशु पोषण एवं पशु स्वास्थ्य पर ध्यान देने से होने वाले आर्थिक लाभों के बारे में जागरूक करें। मत्स्य बीज उत्पादन के लिए जिला स्तर पर अधिकाधिक मत्स्य प्रक्षेत्र विकसित किए जाएं। हर नगरीय निकाय क्षेत्र में फिश पार्लर स्थापित किए जाएं और यह सुनिश्चित करें कि मछली विक्रेता तय फिश पार्लर/मार्केट में ही मछली बेंचे।

खतरनाक थे दिल्ली ब्लास्ट के 'व्हाइट कॉलर' आतंकियों के मंसूबे

● चार साल से रच रहे थे साजिश, निशाने पर थी ग्लोबल कॉफी चेन

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के लाल किले के पास हुए कार ब्लास्ट की जांच ने एक व्यापक और संगठित आतंकी नेटवर्क का खुलासा किया है। शुरुआती तौर पर इसे एक अलग-थलग घटना माना जा रहा था, लेकिन अब सामने आया है कि यह चार वर्षों से सक्रिय एक मॉड्यूल की बड़ी साजिश का हिस्सा था। सूत्रों के अनुसार, गिरफ्तार आरोपियों का नेटवर्क केवल दिल्ली तक सीमित नहीं था। मॉड्यूल ने देश के कई प्रमुख शहरों में हमलों की योजना बनाई थी। खास तौर पर एक अंतरराष्ट्रीय कॉफी चेन के आउटलेट्स को निशाना बनाने की तैयारी की जा रही थी, ताकि अधिकतम प्रचार और दहशत फैलाई जा सके। इस मॉड्यूल की सबसे चौंकाने वाली बात इसका प्रोफाइल है। जांच में सामने आया है कि गिरफ्तार किए गए लोगों में तीन डॉक्टर शामिल हैं।

पश्चिम बंगाल में एसआईआर से बाहर होंगे घुसपैठिए

● शाह बोले- जो रह जाएंगे उनको भाजपा का सीएम निकाल देगा ● ये साल टीएमसी को 'टाटा, बाय-बाय' कहने का है

कोलकाता (एजेंसी)। गृहमंत्री अमित शाह ने पश्चिम बंगाल के नॉर्थ परगना में कहा कि, ममता सरकार घुसपैठियों को संरक्षण दे रही है। बंगाल के लोग टीएमसी को उखाड़ फेकेंगे। इनकी विदाई का समय आ गया है। ममता जी को एसआईआर का जितना विरोध करना हैं कर लें। मतदाता सूची से घुसपैठियों को निकालना ही पड़ेगा। जो बचे घुसपैठिये रह जाएंगे वो भाजपा का सीएम आकर निकाल देगा। साल 2026 टीएमसी को टाटा, बाय-बाय कहने का साल है। टीएमसी तो कम्युनिस्टों से भी आगे निकल गई है। जब मैं पहले आया था, तो मैंने कहा था कि पश्चिम बंगाल में भारी बहुमत से बीजेपी की सरकार बनेगी। उस समय ममता बनर्जी मेरा मजाक उड़ा रही थीं। लेकिन जब भगवान राम ने राम सेतु बनाया था, तो रावण ने भी इसी तरह उनका मजाक उड़ाया था। 2024 में तीन दशक के बाद पहली बार मोदी लगातार तीसरी बार इस देश के प्रधानमंत्री बने हैं। 24 में ही हमने आंध्र प्रदेश में सरकार बनाई। हमने ओडिशा में सरकार बनाई। अरुणाचल में तीसरी बार सरकार बनाई। 2025 में हरियाणा, महाराष्ट्र और दिल्ली में 30 साल के बाद सरकार बनाई और 25 का अंत आते-आते बिहार में भी प्रचंड बहुमत के साथ भाजपा और एनडीए की सरकार बनी।

● **आनंदपुर में लगी आग कोई हादसा नहीं है–** आनंदपुर में लगी आग कोई हादसा नहीं है। 25 लोगों की जान चली गई है, और 27 लोग लापता हैं। यह घटना क्यों हुई। इस मोमो फैक्ट्री में किसका पैसा लगा है। मोमो फैक्ट्री के मालिक कौन हैं। आनंदपुर गोदाम में लगी आग चिल्ला–चिल्लाकर कह रही है कि इसमें ममता बनर्जी के लोग शामिल हैं। अगर ममता बनर्जी इसे छिपाना चाहती हैं, लेकिन अप्रैल के बाद खुलेगा।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 25 °c
न्यूनतम 20°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 1 फरवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

अजित के निधन के चौथे दिन पत्नी सुनेत्रा बनीं उपमुख्यमंत्री

- महाराष्ट्र की पहली महिला डिप्टी सीएम, 12 मिनट का शपथ ग्रहण; शरद पवार नहीं पहुंचे

मुंबई/बारामती (एजेंसी)। अजित पवार की पत्नी सुनेत्रा पवार शनिवार को महाराष्ट्र की पहली महिला डिप्टी सीएम बन गईं। राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने लोकभवन में सुनेत्रा को शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण समारोह करीब 12 मिनट तक चला। शरद पवार इस समारोह में नहीं पहुंचे। इससे पहले दिन में एनसीपी विधायक दल और विधान परिषद सदस्यों की विधान भवन में बैठक बुलाई गई थी। जिसमें सुनेत्रा को पार्टी नेता चुना गया था। डिप्टी सीएम की शपथ से पहले सुनेत्रा ने राज्यसभा के सांसद पद से इस्तीफा दे दिया। अजित पवार की तीन दिन पहले 28 जनवरी को बारामती में प्लेन क्रैश में मौत के बाद डिप्टी सीएम पद खाली हो गया था। महाराष्ट्र लोकभवन में शाम 5 बजे आयोजित सादे समारोह में सुनेत्रा पवार को उपमुख्यमंत्री की शपथ दिलाई गई। इस दौरान महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, उप मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और एनसीपी नेता सुनीत तटकरे, प्रफुल्ल पटेल, छगन भुजबल, धनंजय मुंडे समेत पार्टी के विधायक मौजूद रहे। हालांकि इस दौरान शरद पवार मौजूद नहीं रहे।

अजितदादा पवार का सपना आगे बढ़ाएंगी सुनेत्रा जी- सुनेत्रा पवार के महाराष्ट्र की पहली महिला उपमुख्यमंत्री के रूप शपथ लेने पर पीएम मोदी ने उन्हें बधाई दी है। शनिवार शाम सुनेत्रा पवार को राज्यपाल ने उन्हें पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई।

अजित चाहते थे कि दोनों एनसीपी एक हों : शरद पवार

- सब कुछ तय था, 12 फरवरी को ऐलान होना था, बारामती में घर पर बैठक हुई

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में एनसीपी के दोनों गुटों के विलय पर शरद पवार ने शनिवार को कहा, 'यह अजित पवार की भी इच्छा थी। इसे जरूर पूरा होना चाहिए।' शरद ने कहा कि अजित, शशिकांत शिंदे और जयंत पाटिल ने दोनों गुटों के विलय के बारे में बातचीत शुरू की थी। उन्होंने बताया कि 12 फरवरी को विलय का ऐलान होना था लेकिन दुर्भाग्य से, अजित उससे पहले हमें छोड़कर चले गए। सूत्रों के मुताबिक अजित ने 17 जनवरी को बारामती में शरद पवार से मुलाकात की थी। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि विलय पर चर्चा हुई थी। इस मीटिंग का वीडियो भी सामने आया है। इस मुलाकात के 11 दिन बाद अजित की प्लेन क्रैश में मौत हो गई थी। उधर शरद पवार के बारामती घर पर शनिवार सुबह पवार परिवार की बैठक हुई। इस बैठक में सुप्रिया सुले, रोहित पवार, युगेन्द्र पवार और शरद पवार शामिल हैं। इसके अलावा शरद गुट के नेता भी बैठक में शामिल होने पहुंचे।

दुश्मनों के फाइटर जेट का काल है ये स्वदेशी मिसाइल

डीआरडीओ के आकाश एनजी ने दूर छिपे टारगेट को किया तबाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका-ईरान में बढ़ते तनाव के बीच कई देशों में हालात तनावपूर्ण बने हुए हैं। ऐसे में भारत भी लगातार अपनी सैन्य क्षमता में इजाफा कर रहा है। इसी कड़ी में डीआरडीओ की स्वदेशी मिसाइल तकनीक आकाश-एनजी को लेकर अहम अपडेट सामने आया है। आकाश नेक्स्ट जेन मिसाइल की मारक क्षमता को बढ़ाकर 50 किलोमीटर तक कर दिया है। ये स्वदेशी मिसाइल 50 किलोमीटर तक टारगेट पर सटीक निशाना लगाने में सफल साबित हुई। डीआरडीओ के आकाश एनजी मिसाइल की मारक क्षमता में इजाफा नए डुअल-पल्स मोटर की सफल टेस्टिंग के बाद मिली है। इस नई तकनीक से अब यह मिसाइल दुश्मनों के फाइटर जेट को लेकर और भी खतरनाक हो गई है। अब हवाई खतरों को आसानी से मार गिराने में सक्षम होगी। आर्ममेंट रिसर्च एंड डेवलपमेंट एस्टेब्लिशमेंट के प्रमुख अंकाथी राजू ने बताया कि इन टेस्ट के बाद सतह से हवा में मार करने वाली ये मिसाइल रडार पर आसानी से पकड़ में नहीं आएंगे। इससे पहले आकाश मिसाइलों में रैमजेट इंजन का इस्तेमाल होता था। एक खास रॉकेट मोटर लगाई गई है।

बहुत खास है मिसाइल क्षमता में हुआ बदलाव

आकाश एनजी की मारक क्षमता में इजाफे से अब ये लड़ाकू विमानों, क्रूज मिसाइलों और तेज रफ्तार वाले ड्रोनों को भी आसानी से निशाना बना सकती है। ये ऐसे टारगेट होते हैं जिन्हें पुराने एयर डिफेंस सिस्टम पकड़ नहीं पाते थे। इस मिसाइल की रेंज में सबसे बड़ा सुधार इसके प्रोपल्शन सिस्टम में किए गए बदलावों की वजह से हुआ है। परीक्षण के दौरान आकाश-एनजी मिसाइल ने 50 किलोमीटर की पूरी रेंज पर एक तेज गति वाले बंशी पायलटलेस टारगेट एयरक्राफ्ट को सफलतापूर्वक इंटरसेप्ट किया और नष्ट कर दिया। बंशी ड्रोन को खास तौर पर ऐसे मुश्किल टारगेट पर ऐक्शन लिए जाना जाता है, इसमें जमीन के बहुत करीब उड़ने वाली क्रूज मिसाइलें और अनमैन्ड एरियल व्हीकल शामिल हैं।

देश की पहली एलएनजी ट्रेन चलने को हुई तैयार

- एक बार टैंक फुल करने पर 2200 किलोमीटर तक चलेगी
- डीजल की तुलना में तीन गुना खर्च होगा कम, रेलवे भी तैयार

अहमदाबाद (एजेंसी)। भारत की रेल सुविधाओं में एक नया अध्याय जुड़ने जा रहा है। क्योंकि देश की पहली लिक्विफाइड नेचुरल गैस (एलएनजी) से चलने वाली ट्रेन अहमदाबाद पहुंच गई है। इस हाईटेक ट्रेन की खास बात यह है कि यह एक बार पूरी तरह से भरे टैंक में 2200 किलोमीटर तक की लंबी दूरी तय कर सकती है। मेहसाणा और साबरमती में चल रहा ट्रायल गुजरात के मेहसाणा और साबरमती खंड के बीच ट्रेन का ट्रायल चल रहा है। ये ट्रेन अब तक 2000 किलोमीटर से अधिक की दूरी तय कर चुकी है। आने वाले समय में इस खंड की 8 से 10 और ट्रेनों में एलएनजी तकनीक को अपनाने की योजना है। सफल ट्रायल के बाद इस तकनीक का बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाएगा। इस प्रोजेक्ट के तहत, लगभग 1400 हॉर्सपावर क्षमता वाली ट्रेनों को एलएनजी ईंधन प्रणाली में परिवर्तित किया गया है। प्रदूषण में आएगी भारी कमी अहमदाबाद के डीआरएम वेद प्रकाश ने बताया कि एलएनजी डीजल से सस्ता होने के कारण ट्रेन चलाने की कुल लागत कम हो जाती है। एलएनजी ईंधन से प्रदूषण में भी भारी कमी आती है। कार्बन डाई ऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड और धूल के कण जैसे हानिकारक तत्व कम मात्रा में होंगे।

यूपी में कोटेदार गांवों में बनाएंगे आयुष्मान कार्ड

- लाभार्थियों की आईडी और पासवर्ड बनाने की प्रक्रिया शुरू

अमेठी (एजेंसी)। शासन के निर्देश पर अब गांव-गांव आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के तहत पात्र लाभार्थियों के आयुष्मान कार्ड बनाए जाएंगे। इसके लिए कोटेदारों को जिम्मेदारी सौंपी गई है। शनिवार को तहसील सभागार में आयोजित कार्यक्रम के दौरान सभी कोटेदारों की आईडी और पासवर्ड बनाने की प्रक्रिया शुरू की गई। तकनीकी टीम की ओर से कोटेदारों से आवश्यक अभिलेख जमा कराकर उनकी आईडी जनरेट की गई। कार्यक्रम में मौजूद आपूर्ति निरीक्षक शुभम कुमार ने बताया कि शासन से स्पष्ट निर्देश मिले हैं कि जिन उपभोक्ताओं का अभी तक आयुष्मान कार्ड नहीं बना है, पहले उनका कार्ड बनाया जाएगा।

तिरुपति मंदिर बोर्ड बोला, लड्डू मामले में क्लीन चिट नहीं दी

- चार्जशीट में घी में मिलावट के सबूत, रिपोर्ट में चर्बी की पुष्टि नहीं

तिरुपति (एजेंसी)। तिरुपति मंदिर के लड्डू में मिलावट के मामले में मंदिर के बोर्ड तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम ने कहा का उसने किसी को भी क्लीनचिट नहीं दी है। बोर्ड के चेयरमैन बीआर नायडू ने शुक्रवार को तिरुपति में पद्मावती रेस्ट हाउस में मीडिया से बात की। उन्होंने कहा कि सीबीआई की चार्जशीट में श्रीवारी लड्डू बनाने में मिलावटी घी की मौजूदगी साफ तौर पर साबित हुई है। उन्होंने कहा कि कुछ समूह झूठा दावा करके भक्तों को गुमराह कर रहे हैं कि इस मामले में क्लीन चिट दे दी गई है। दरअसल, सीबीआई ने फाइनल चार्जशीट में कहा है कि लड्डुओं में पशु चर्बी नहीं, मिलावटी घी का इस्तेमाल हुआ था। नेल्लोर कोर्ट में पेश चार्जशीट में कहा गया कि प्रसाद में इस्तेमाल होने वाले घी में वनस्पति तेल, बीटा केरोटिन व एस्टर केमिकल की मिलावट पाई गई। उत्तराखंड के भगवानपुर की भोले बाबा डेयरी ने मिलावटी घी की सप्लाई की थी। वायएसआर के वरिष्ठ नेता और पूर्व टीटीडी चेयरमैन भूमना करुणाकर रेड्डी ने कहा कि रिपोर्ट में तिरुपति लड्डू में कोई पशु चर्बी नहीं पाई गई। उन्होंने कहा कि रिपोर्ट ने गठबंधन नेताओं के झूठे प्रचार और राजनीतिक नाटक का पर्दाफाश किया। बीआर नायडू ने कहा कि घी के टेंडर उन कंपनियों को दिए गए जिनके पास जरूरी क्षमता नहीं थी। लगभग 60 लाख किलोग्राम मिलावटी घी खरीदा गया, जिसकी कीमत लगभग 250 करोड़ थी। उन्होंने कहा कि नेशनल डेयरी डेवलपमेंट बोर्ड द्वारा किए गए टेस्ट में घी में जानवरों की चर्बी की मौजूदगी की पुष्टि हुई है। चेयरमैन बीआर नायडू ने कहा कि कुछ संस्थाओं ने घी बनाने का दावा किया।

- रविदास जयंती पर डेरा सचखंड बल्लां जाने का है कार्यक्रम

पीएम के पंजाब दौरे से पहले स्कूलों को उड़ाने की धमकी

चंडीगढ़ (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पंजाब दौरे से ठीक एक दिन पहले जालंधर के कैम्ब्रिज स्कूल को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। शनिवार को ईमेल द्वारा मिली धमकी के बाद पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों ने तुरंत कार्रवाई करते हुए स्कूल में तलाशी अभियान चलाया। ईमेल भेजने वाले ने खुद को 'बिली हॉल' बताया है और धमकी दी कि पीएम मोदी के दौरे के संबंध में तीन से चार स्कूलों में बम धमाके किए जाएंगे।

ईमेल में पीएम मोदी के डेरा सचखंडा बल्लां जाने का भी जिक्र है। पुलिस इस मामले की जांच कर रही है। जालंधर की पुलिस कमिश्नर धनप्रीत कौर ने बम की धमकी वाले ईमेल की पुष्टि की और बताया कि मामले की जांच चल रही है। उन्होंने यह भी बताया कि जालंधर के स्कूल शनिवार को सार्वजनिक अवकाश के कारण बंद थे, क्योंकि रविवार को गुरु रविदास जयंती मनाई जानी है और शोभायात्रा भी निकाली जा रही है। पीएम मोदी रविवार को जालंधर के पास बल्लां गांव में स्थित डेरा सचखंड बल्लां जाएंगे।

पीएम मोदी गुरु रविदास की 649वीं जयंती पर डेरा सचखंड बल्लां जा रहे हैं।

- **डीजीपी ने सुरक्षा व्यवस्था का लिया जायजा-** पीएम मोदी के दौरे को लेकर पंजाब पुलिस के डीजीपी गौरव यादव ने जालंधर पहुंचकर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। सीनियर अधिकारियों को डेरा में कड़ी निगरानी रखने, सभी आने-जाने वाले रास्तों को सुरक्षित करने और भीड़ प्रबंधन के प्रभावी उपाय लागू करने के निर्देश दिए गए हैं। स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप (एसपीजी) के जवानों को भी डेरा सचखंड बल्लां में तैनात किया गया है। अडमपुर से डेरा तक बहुस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था की गई है। सुरक्षा को और मजबूत करने के लिए, अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट ने 30 जनवरी से 1 फरवरी, 2026 तक जालंधर को नो-फ्लाई जोन घोषित किया है। इस आदेश के तहत जिले की सीमा के भीतर किसी भी तरह के ड्रोन, हेलीकॉप्टर या रिमोट से चलने वाले विमानों को उड़ाने की मनाही है।

नीले-पीले कलर में पुतेंगे पंजाब के 852 स्कूल

विपक्षी दलों की शिकायत, यह आप के झंडे का कलर है

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब के 852 स्कूलों की रंगाई-पुताई के आदेश से बड़ा बखेड़ा खड़ा हो गया है। विपक्षी दलों का आरोप है कि भगवंत मान सरकार स्कूलों को आम आदमी पार्टी के नीले-पीले झंडे में रंग रही है।

हालांकि आम आदमी पार्टी का कहना है कि पुताई के लिए रंगों का कोड शिक्षा विभाग के अधिकारियों ने तय किया है, सरकार ने नहीं। डायरेक्टर जनरल ऑफ स्कूल एजुकेशन अरविंद कुमार एमके ने बताया कि रंगों के चुनाव के पीछे राजनीतिक सोच नहीं है। सरकार सिर्फ उन्हीं स्कूलों को पुतवा रही है, जिसमें पांच साल या उससे अधिक समय से पेंट नहीं हुआ है।

- **अकाली दल ने की आलोचना, आप ने दी सफाई-** सरकार के इस आदेश पर शिरोमणि अकाली दल के ज्ञानी हरप्रीत सिंह ने कहा कि स्कूलों को आम आदमी पार्टी के झंडे के कलर में रंगने का फैसला शर्मनाक है और यह एजुकेशन सिस्टम के लिए एक गंभीर खतरा भी है। उन्होंने कहा कि सरकारी स्कूल राज्य की संपत्ति हैं, किसी एक राजनीतिक दल की नहीं। उन्होंने यह आदेश तत्काल प्रभाव से वापस लेने की मांग की। आप के सांसद मालविंदर सिंह कंग ने इस पर सफाई दी है। उन्होंने कहा कि हर रंग किसी न किसी पार्टी से जुड़ा होता है। लाल रंग कम्युनिस्टों का है तो भगवा बीजेपी का है।

आर्थिक सर्वेक्षण -प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत का प्रतिबिंब

सत्येंद्र जैन, आर्थिक चिंतक

संसद में बजट सत्र में आर्थिक सर्वेक्षण रूपी दर्पण में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत का प्रतिबिंब स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर हो रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उच्चारित मंत्र-सिद्धिबुद्धिप्रदे देवि भुक्तिमुक्तिप्रदायिनि। मंत्रपूते सदा देवि महालक्ष्मि नमोस्तुते।

अर्थात्- माँ लक्ष्मी हमें सिद्धि और विवेक देती हैं, समृद्धि और कल्याण भी देती हैं। धन की देवी माँ लक्ष्मी के इस मंत्र को आत्मसात करते हुए केंद्रीय वित्त एवं कारपोरेट कार्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण लगातार नौवीं बार बजट प्रस्तुत करने जा रही हैं। वह भारतीय संसद के इतिहास में पहली महिला वित्त मंत्री हैं, जो निर्बाध रूप से संसद में नौवीं बार बजट प्रस्तुत करने जा रही हैं। उन्होंने बजट सत्र के दौरान संसद में वर्ष 2025-26 के आर्थिक सर्वेक्षण प्रस्तुत किये।

वित्त वर्ष 2026 के लिए जीडीपी और जीवीए वृद्धि के लिए प्रथम अग्रिम अनुमान क्रमशः 7.4 और 7.3 प्रतिशत । विकास दर निरन्तर चौथी बार विश्व में सर्वाधिक है। पिछले सर्वेक्षण में 6.3-6.8% का अनुमान था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कुशल आर्थिक नीतियों का सुफल है कि यह आर्थिक सर्वेक्षण अपने ही पूर्वानुमानों को ध्वस्त कर रहे हैं। भारत की रिफॉर्म एक्सप्रेस,विकास के पथ पर सरपट दौड़ते हुए,विकसित भारत के गंतव्य रूपी लक्ष्य पर पहुँचने को लालायित है। भारत दुनिया की सबसे तेज बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था बना हुआ है।भारत की वृद्धि का अनुमान लगभग 7.4 प्रतिशत, जबकि वित्त वर्ष 2027 के लिए वास्तविक जीडीपी वृद्धि 6.8 प्रतिशत से 7.2 प्रतिशत का अनुमान है। वित्त वर्ष 2025 में केन्द्र की राजस्व प्राप्ति जीडीपी के 11.6 प्रतिशत तक वृद्धि हुई है। राजकोषीय घाटा 4.4 प्रतिशत का अनुमान है पिछले वर्ष राजकोषीय घाटा अनुमान 4.8 प्रतिशत था। अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने की दिशा में राजकोषीय घाटे में कमी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं निर्मला सीतारमन के कुशल वित्तीय प्रबंधन का सुफल है।

बैंक एनपीए में बहु-दशकीय गिरावट 2.2 प्रतिशत तक हुई है।यह मोदी सरकार के पूर्व में किए गए राष्ट्रीय बैंक जैसे ओरिएंटल बैंक, आंध्रा बैंक, इलाहाबाद बैंक आदि के विलय के निर्णय की सफलता को भी प्रदर्शित करता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के महत्वपूर्ण आर्थिक सुधार जन धन योजना के अंतर्गत मार्च 2025 तक 55 करोड़ 2 लाख बैंक खाते खोले गए हैं। ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्र में 36 करोड़ 63 लाख खाते खुले हैं। सितम्बर 2025 में विशिष्ट निवेशकों की संख्या12 करोड़ से अधिक हुई, इनमें लगभग 25 प्रतिशत महिलाएं शामिल हैं ।

वर्ष 2005 से 2024 के दौरान भारत का वैश्विक व्यापार निर्यात एक प्रतिशत से लगभग दोगुना होकर 1.8 प्रतिशत हुआ है।

वित्त वर्ष 2025 में सेवा निर्यात अब तक का सर्वाधिक 387.6 बिलियन अमरीकी डॉलर हुआ है।13.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

वित्त वर्ष 2025 के दौरान भारत विश्व में सबसे बड़ा जमा प्राप्ति वाला देश बना है। 135.4 बिलियन अमरीकी डॉलर का आंकड़ा छुआ है।16 जनवरी, 2026 को भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 701.4 बिलियन अमरीकी डॉलर हुआ है। इसमें 11 महीने का आयात और विदेशी कर्ज का 94 प्रतिशत शामिल है। अप्रैल से दिसंबर 2025 के दौरान औसत घरेलू मुद्रास्फीति 1.7 प्रतिशत रही है। एतिहासिक निम्न स्तर पर है। कृषि वर्ष 2024-25 के दौरान भारत का खाद्यान्न उत्पादन 3577.3 लाख मीट्रिक टन एलएमटी पर पहुंचा है। पिछले वर्ष के मुकाबले 254.3 एलएमटी की वृद्धि हुई है।यह वृद्धि चावल, गेहूं, मक्का और मोटे अनाज श्री अन्न के उत्पादन में बढोत्तरी के कारण हुई है। खाद्य अनाज उत्पादन में वृद्धि के अतिरिक्त बागवानी, जो कृषि जीवीए का लगभग 33 प्रतिशत हिस्सा है, कृषि वृद्धि का एक प्रमुख चालक बनकर उभरी है। 2024-25 में बागवानी उत्पादन 362.08 मिलियन टन (एमटी) तक पहुंच गया है।पीएम किसान सम्मान योजना के शुरू होने से अब तक पात्र किसानों को 4.09 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि जारी की गई है।

वर्ष 2047 तक विकसित भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए मनरेगा के स्थान पर ग्रामीण रोजगार को संरेखित करते हुए विकसित भारत-जी राम जी की स्थापना की गई है।

वित्त वर्ष 2026 की पहली और दूसरी तिमाही में विनिर्माण वृद्धि क्रमशः 7.72 प्रतिशत और 9.13 प्रतिशत रही, यह ढांचागत सुधार को प्रदर्शित करता है। 14 क्षेत्रों में उत्पादन से संबद्ध प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना के अंतर्गत 2 लाख करोड़ रुपये का वास्तविक निवेश हुआ है। सितम्बर 2025 तक उत्पादन,बिक्री 18.7 लाख करोड़ रुपये से अधिक हुई और 12.6 लाख से अधिक रोजगार सृजित हुए हैं। भारत सेमीकंडक्टर मिशन से घरेलू क्षमता बढ़ी है। 10 परियोजनाओं में लगभग 1.60 लाख करोड़ रुपये का निवेश हुआ है ।

रेलवे के हाईस्पीड कॉरिडोर में वित्त वर्ष 2014 में 550 किलोमीटर की तुलना में वित्त वर्ष 2026, दिसंबर 2025 तक 5,364 किलोमीटर हुआ, वित्त वर्ष 2026 में 3500 किलोमीटर की वृद्धि हुई है।

भारत दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा घरेलू उड़ान बाजार, हवाई अड्डों की संख्या 2014 में 74 से 2025 में 164 हुई है।

डिस्कॉम के लिए ऐतिहासिक परिवर्तन वित्त वर्ष 2025 में पहली बार 20,701 करोड़ रुपये का सकारात्मक पीएटी दर्ज किया गया है।

ओवरऑल नवीकरणीय ऊर्जा और स्थापित सौर ऊर्जा क्षमता के क्षेत्र में भारत की विश्व स्तर पर तीसरी रैंक है।

भारत स्वायत्त सैटेलाइट डॉकिंग (स्पेडैक्स) क्षमता प्राप्त करने वाला चौथा देश बना है।

शिक्षा के प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और माध्यमिक चरण में कुल नामांकन अनुपात,जीईआर क्रमशः 90.9, 90.3 और 78.7 रहा है।भारत में इस समय 23 आईआईटी, 21 आईआईएम और 20 एम्स विद्यमान हैं। जंजीबार और अबूधाबी में दो अंतर्राष्ट्रीय आईआईटी कैम्पस स्थापित हैं।

1990 के बाद भारत में मातृ और शिशु मृत्यु दर में गिरावट, वैश्विक औसत से कम हुई है। यह उपलब्धि अनुकरणीय है। प्रशंसनीय है।

जनवरी 2026 तक ई-श्रम पोर्टल पर 31 करोड़ से अधिक असंगठित कामगार पंजीकृत हैं।54 प्रतिशत महिलाएं शामिल हैं। वित्त वर्ष 2025 में राष्ट्रीय करियर सेवा पोर्टल पर रिक्तियों की संख्या 2.8 करोड़ से अधिक हुई है। वित्त वर्ष 2026 में सितंबर तक 2.3 करोड़ की संख्या पार की है।

नीति आयोग द्वारा मापित बहु-आयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई) 2005-06 में 55.3 प्रतिशत से 2022-23 में 11.28 प्रतिशत हुई है। उल्लेखनीय कमी आई है।

समीक्षा के अनुसार महत्वपूर्ण वृद्धि के लिए अनुशासित स्वदेशी का आह्वान, महत्वपूर्ण क्षमता प्राप्त करने के लिए त्रिस्तरीय रणनीति तैयार, निवेश लागत मूल्य में कमी, उन्नत विनिर्माण में मजबूती और आत्मनिर्भरता से रणनीतिक अपरिहार्यता की ओर प्रगति का मार्ग प्रशस्त हो रहा है। इस आर्थिक सर्वेक्षण में अर्थव्यवस्था के चिंतन के साथ-साथ मानवीय स्वास्थ्य के प्रति भी दिशा दी गई है।

इति श्री।

अंत्योदय योजना में 35 किलो प्रति परिवार मिल रहा खाद्यान्न : खाद्य मंत्री राजपूत

प्रत्येक पात्रता पर्चीधारी परिवार को राशन दुकान से मिल रहा खाद्यान्न

भोपाल (नप्र)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविन्द सिंह राजपूत ने बताया है कि प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना में प्रदेश की लगभग 5.37 करोड़ अबादी को प्रतिमाह निःशुल्क खाद्यान्न का वितरण किया जा रहा है। इसमें अंत्योदय अन्न योजना में 35 किलोग्राम प्रति परिवार एवं प्राथमिकता श्रेणी के परिवारों को 5 किलोग्राम प्रति सदस्य खाद्यान्न दिया जा रहा है। प्रत्येक पात्रता पर्चीधारी परिवार को राशन दुकान से खाद्यान्न उपलब्ध कराया जा रहा है। पात्र परिवार के किसी भी सदस्य द्वारा वन नेशन-वन राशन कार्ड अन्तर्गत प्रदेश एवं देश की किसी भी उचित मूल्य दुकान से बायोमेट्रिक सत्यापन/ओटीपी/नॉमिनी के माध्यम से खाद्यान्न प्राप्त किया जा सकता है। प्रदेश के 15 लाख से अधिक पात्र परिवारों द्वारा पोर्टेबिलिटी से अपनी सुविधा अनुसार अन्य दुकान से प्रतिमाह राशन प्राप्त किया जा रहा है। पात्र परिवारों को पूरे माह उचित मूल्य दुकान से राशन का वितरण किया जा रहा है।

भारत सरकार द्वारा पात्र परिवारों की पहचान सुनिश्चित करने एवं वास्तविक गरीब परिवारों को निःशुल्क खाद्यान्न वितरण करने तथा अपात्र एवं 2 बार नाम वाले हितग्राहियों को हटाकर नवीन हितग्राहियों को लाभांवित करने के लिये ईकेबायसी करना अनिवार्य किया गया है। इसमें 05 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को छोडकर, पात्र हितग्राहियों के ईकेबायसी उचित मूल्य दुकान पर लगाई गई पीओएस मशीन के साथ ही भारत सरकार के मेरा ईकेबायसी मोबाईल ऐप से हितग्राही के फेस अथेंटिकेशन द्वारा किया जा सकता है।

सीएम ने सिक्ख गुरु, गुरु हरराय जी के प्रकाश पर्व पर दीं शुभकामनाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सिक्ख धर्म के 7वें गुरु, गुरु हरराय जी के पावन प्रकाश पर्व पर प्रदेशवासियों को शुभकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि श्रद्धेय गुरु महाराज की मानव सेवा की परम्परा हमें समरसता, सहिष्णुता और परोपकार के मार्ग पर निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। उनका पूरा जीवन मानवता के कल्याण का शाश्वत संदेश है।

8वीं की छात्रा बनी मां, सरकारी हॉस्टल में रहती थी, अधीक्षिका निलंबित

बालाघाट (नप्र)। जिला अस्पताल के प्रसूति वार्ड में उस समय हड़कंप मच गया, जब छात्रावास में रहकर पढ़ाई कर रही लगभग साढ़े 13 वर्षीय नाबालिग छात्रा ने एक बच्ची को जन्म दिया। इस घटना ने आवासीय छात्रावासों में छात्राओं के स्वास्थ्य परीक्षण और निगरानी व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

कैसे मिली जानकारी?- अस्पताल चौकी से मिली सूचना के बाद महिला थाना पुलिस ने तत्काल प्रारंभिक कार्रवाई करते हुए मामले की जानकारी गढ़ी थाना पुलिस को सौंप दी। पुलिस ने इस प्रकरण में एक नाबालिग आरोपी को हिरासत में लिया है, जिसे किशोर न्यायालय में पेश किया जाना है। महिला थाना प्रभारी किरण वरकड़े ने बताया कि अस्पताल से सूचना मिलते ही कानूनी प्रक्रिया शुरू कर दी गई थी और आगे की विस्तृत जांच गढ़ी थाना द्वारा की जाएगी।

कहां का है मामला?- मामला बैहर विकासखंड के परसामऊ स्थित कस्तूरबा गांधी बालिका छात्रावास से जुड़ा है, जहां पीड़ित छात्रा रहकर पढ़ाई कर रही थी। सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग शकुंतला डामोर ने प्रथम दृष्टया लापरवाही पाए जाने पर छात्रावास अधीक्षिका चैनबती सैयाम को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। आदेश में कहा गया है कि छात्रा के स्वास्थ्य में आए बदलाव को गंभीरता से नहीं लिया गया और न ही उसका समय पर स्वास्थ्य परीक्षण कराया गया।

प्रशासन ने किसकी गलती मानी?- जिला शिक्षा केंद्र के डीपीसी जी.पी. बर्मन ने भी छात्रावास वार्डन और संबंधित एएनएम की लापरवाही स्वीकार की है। जानकारी के अनुसार, पीड़ित छात्रा आठवीं कक्षा में पढ़ती है और उसकी तबीयत लंबे समय से ठीक नहीं रहती थी। वह अक्सर छात्रावास से अनुपस्थित भी रहती थी, लेकिन छात्रावास प्रबंधन द्वारा न तो नियमित स्वास्थ्य जांच कराई गई और न ही अभिभावकों से समुचित संपर्क किया गया।

छात्रा ने बयान में क्या कहा?- छात्रा ने पुलिस को दिए बयान में बताया है कि उसके गांव के एक व्यक्ति से उसका संपर्क था। पुलिस इस बयान के आधार पर मामले की गंभीरता से जांच कर रही है। पूरे घटनाक्रम ने छात्रावासों में रह रही बालिकाओं की सुरक्षा, स्वास्थ्य निगरानी और प्रशासनिक जिम्मेदारी को लेकर बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है। प्रशासनिक अधिकारियों का कहना है कि दोषियों के खिलाफ विभागीय और कानूनी कार्रवाई जारी रहेगी, ताकि भविष्य में इस तरह की लापरवाही दोहराई न जाए।

छात्र का सरेराह अपहरण पीटा, रकम ऐंठी

चार छात्रों ने वारदात को अंजाम दिया, पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार किया

भोपाल (नप्र)। भोपाल में ऑनलाइन लूडो गेम में पैसे नहीं देने पर युवक का अपहरण करने का मामला सामने आया है। वारदात को 1500 रुपए की रकम नहीं देने पर अंजाम दिया गया। बदमाशों ने युवक को एमपी नगर जोन-2 स्थित चाय-सुट्टा बार से कार में जबरन बैठाकर अगवा किया। कोलार इलाके में ले जाकर मारपीट की।डरा धमकाकर आरोपियों ने अपने खाते में 11 हजार रुपए ट्रांसफर करवाए। मारपीट और रकम लेने के बाद बदमाशों ने पीड़ितों को उसी जगह छोड़ा दिया जहां से उन्हें किडनैप किया था। अपहरण के आरोपी और पीड़ित, सभी स्टूडेंट्स हैं।

अब जितना निर्माण उतना मिलेगा पीएम आवास का पैसा

1.20 लाख की रकम तीन किस्तों में मिलेगी, हर बार 40 हजार देगी सरकार

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के हितग्राहियों को अब 1.20 लाख रुपए की सहायता राशि तीन किस्तों में दी जाएगी। आवास निर्माण के हर चरण में प्रोग्रेस की जियो टैगिंग करना अनिवार्य होगा। निर्माण के लिए तय लेवल की पुष्टि होने के बाद ही अगली किस्त की राशि जारी की जाएगी। अधिकारियों को यह भी निर्देश दिए गए हैं कि निर्माण कार्य की नियमित मॉनिटरिंग की जाए ताकि राशि का दुरुपयोग न होने पाए।

प्रदेश के पंचायत और ग्रामीण विकास विभाग की ओर से पीएम आवास ग्रामीण योजना के अंतर्गत वित्तीय वर्ष 2025-26 में स्वीकृत आवासों के हितग्राहियों को सहायता राशि तीन किस्तों में दिए जाने के संबंध में विकास आयुक्त कार्यालय भोपाल द्वारा निर्देश जारी किए गए हैं। इसमें कहा गया है कि जिले स्तर पर आवासों की स्वीकृति की प्रक्रिया जारी है। स्वीकृत आवासों के हितग्राहियों को कुल 1 लाख 20 हजार रुपए की राशि तीन स्टेप में दी जाएगी। इसके लिए आवास सॉफ्ट पोर्टल पर एंट्री पहले ही की जा चुकी है। निर्देशों में स्पष्ट किया गया है कि आवास स्वीकृति से पूर्व हितग्राही की जियो टैगिंग अनिवार्य रूप से सत्यापित की जाए। साथ ही पहली किस्त जारी होने के साथ ही मनरेगा के अंतर्गत मजदूरी भुगतान भी किया जाए।

ऐसे मिलेंगी तीन किस्तें

- पहली किस्त- 40,000 रुपए आवास स्वीकृत होने पर
- दूसरी किस्त- 40,000 रुपए प्लिंथ स्तर पूर्ण होने पर
- तीसरी किस्त-40,000 रुपए लिंटल लेवल पूर्ण होने पर

जियो टैगिंग के बिना नहीं आएगा पैसा

निर्देशों में कहा गया है कि आवास निर्माण के हर चरण में प्रगति की जियो टैगिंग करना अनिवार्य होगा। तय कंसट्रक्शन लेवल की पुष्टि के बाद ही अगली किस्त की राशि जारी की जाएगी। अधिकारियों को यह भी निर्देश दिए गए हैं कि निर्माण कार्य की नियमित मॉनिटरिंग की जाए ताकि राशि का दुरुपयोग न हो और हितग्राही का आवास समय पर बनकर तैयार हो सके।

अतिक्रमण हटाने वाले अफसरों पर रिश्वत का आरोप, वीडियो बनाया

व्यापारी बोला- महापौर देखिए, यहां पैसे लेकर दुकानें लगवाई जाती हैं, अधिकारी बोले- झूठी है शिकायत

भोपाल (नप्र)। भोपाल के बाजारों में अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई के बीच निगम के 3 अफसरों के सामने ही रुपए लेन-देन करने का यह वीडियो एक व्यापारी ने बना लिया। 39 सेकंड के इस वीडियो में व्यापारी की अफसरों से तीखी बहस भी हो रही है। वह कार्रवाई से नाराज था।

बता दें कि शुक्रवार को बुधवारा इलाके में निगम के 3 अतिक्रमण अधिकारी शैलेंद्र सिंह भदौरिया, महेश गौहर और अरविंद चौधरी अमले के साथ अतिक्रमण हटाने पहुंचे थे, तभी दुकानें हटाने से नाराज एक दुकानदार ने वीडियो बनाया, जो शनिवार को सामने आया।

इसे लेकर विपक्ष ने भी सवाल उठाए हैं। नेता प्रतिपक्ष शबिस्ता जकी ने कहा कि भोपाल में अतिक्रमण माफिया सक्रिय हैं, जिनसे निगम के जिम्मेदारों की सांठ-गांठ है। उनके कहने पर ही अतिक्रमण लगता है। इसे लेकर कई बार निगम परिषद की बैठकों में भी मुद्दा उठा चुके हैं।

ये पहुंचे थे कार्रवाई करने

अतिक्रमण अधिकारी शैलेंद्र सिंह भदौरिया के पास दक्षिण-पश्चिम और नरेला विधानसभा का प्रभार है। महेश गौहर उत्तर विधानसभा, जोन-1 और 20 का जिम्मा संभाल रहे हैं। वहीं अरविंद चौधरी, भदौरिया के सहयोगी हैं। 16 जनवरी को भोपाल सांसद आलोक शर्मा ने कलेक्टोरेट में बैठक ली थी। उन्होंने पुराने शहर के बाजारों के अतिक्रमण पर नाराजगी जताई थी। इसके बाद 21 जनवरी को जिला प्रशासन, नगर निगम और पुलिस ने मिलकर लगातार 3 दिन तक बड़े स्तर पर कार्रवाई करते हुए 16 ट्रक सामान जब्त किया था। इसके बाद भी कार्रवाई हो रही है। शुक्रवार को भी अमला बुधवारा पहुंचा था। इसी कार्रवाई के बीच अतिक्रमण के नाम पर अवैध वसूली को लेकर यह वीडियो सामने आया।

निगम अधिकारी- कोई जवाब नहीं देते

व्यापारी- महापौर साहब देखिए बुधवारा चौराहे पर दुकानें लग रही हैं। यदि पैसे लेकर जाते होंगे तो दुकानें लगेंगी? यदि पैसे नहीं देंगे तो दुकानें नहीं लगाने देते हैं। (39 सेकंड के वीडियो में व्यापारी रुपए लेन-देने की बात बार-बार दोहराता है, जबकि निगम अधिकारी पास में खड़े होकर सुनते रहते हैं)

कांग्रेस ने 18 जिला संगठन महासचिव नियुक्त किए

कमलनाथ के गढ़ छिंदवाड़ा में 73 जिला महामंत्री बनाए सागर, मऊगंज की डीसीसी घोषित

भोपाल (नप्र)। दिल्ली में राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे के साथ हुई बैठक के बाद एमपी कांग्रेस में ताबड़तोड़ नियुक्तियों का सिलसिला शुरू हो गया है। जीतू पटवारी के निर्देश पर एमपी कांग्रेस के संगठन प्रभारी डॉ. संजय कामले ने 18 जिलों में संगठन महासचिवों की नियुक्ति की है।

14 प्रकोष्ठों के प्रमुखों की नियुक्ति- कांग्रेस ने 14 प्रकोष्ठों के अध्यक्ष, संयोजक और समन्वयकों की नियुक्ति की है। अलग-अलग जातियों को साधने के लिए बंगाली समाज, बंजारा समाज, तैलिक साहू राठौर समाज, सर्व विश्वकर्मा समाज, स्वर्णकला, कोली/कोरी समाज, रजक समाज के नेताओं को समन्वयक संयोजक बनाया है।18 जिला संगठन महासचिव नियुक्त किए गए हैं।

छिंदवाड़ा की जिला कार्यकारिणी में 73 महामंत्री बनाए

पूर्व सीएम कमलनाथ के गढ़ छिंदवाड़ा की जिला कांग्रेस कमेटी (डीसीसी) में पदाधिकारियों और सदस्यों को मिलाकर 258 पदाधिकारियों की नियुक्ति की गई है। छिंदवाड़ा में कमलनाथ और नकुलनाथ को जिला कांग्रेस कमेटी में संरक्षक बनाया गया है।

छिंदवाड़ा की जिला कांग्रेस कमेटी में कुल 258 नेताओं की नियुक्ति

कार्यवाहक अध्यक्ष- 2
कोषाध्यक्ष-1
कार्यालय मंत्री- 2
प्रवक्ता- 1
मीडिया प्रभारी- 1
सोशल मीडिया प्रभारी
उपाध्यक्ष- 33
महामंत्री-73
सचिव- 70
सहसचिव- 3
आमंत्रित सदस्य- 62
विशेष आमंत्रित- 9
कुल पदाधिकारी - 258

सागर में 23 जिला महामंत्री बनाए

उपाध्यक्ष-8
महामंत्री- 23
सचिव- 21
कार्यकारिणी सदस्य- 8
संरक्षक सदस्य- 11
विशेष आमंत्रित सदस्य- 42
प्रवक्ता-2
स्थाई आमंत्रित सदस्य- 23
स्थाई कार्यालय मंत्री-1
सोशल मीडिया अध्यक्ष-1
निर्वाचन प्रभारी -1

मऊगंज जिला कांग्रेस की टीम में 23 महामंत्री बनाए

उपाध्यक्ष-7
महामंत्री- 23
सचिव- 28
कोषाध्यक्ष- 1

बक्सवाहा नगर परिषद में ईओडब्ल्यू का छापा

30 हजार की रिश्वत लेते धरी गई महिला सीएमओ और एसई

छतरपुर (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले की बक्सवाहा नगर परिषद में ईओडब्ल्यू ने बड़ी कार्रवाई की है। भ्रष्ट सीएमओ व सब इंजीनियर को 30 हजार रुपए की रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफ्तार किया है।

जानकारी अनुसार बक्सवाहा नगर परिषद में पीएम आवास और पट्टे की स्वीकृति के लिए सीएमओ और सब इंजीनियर घूस मांग रहे थे। शिकायत के बाद आर्थिक अपराध प्रकोष्ठ (ईओडब्ल्यू) सागर ने शुक्रवार को इन दोनों अधिकारियों को 30 हजार रुपए की रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

पहले 40 हजार मांगे, 30 हजार में सौदा तय किया

बक्सवाहा के रहने वाले हरिराम अहिरवार ने सागर ईओडब्ल्यू कार्यालय में शिकायत दर्ज कराई थी कि उनका आवासीय पट्टा और प्रधानमंत्री आवास योजना का आवेदन नगर परिषद में लंबित है। इस काम के बदले सीएमओ नेहा शर्मा ने उनसे 40 हजार रुपए की रिश्वत की मांग की थी। बातचीत के बाद मामला 30 हजार रुपए में फाइनल किया था।

ईओडब्ल्यू टीम ने प्लानिंग कर ट्रैप की कार्रवाई की तैयारी की थी। उधर पकड़े जाने के डर से सीएमओ नेहा शर्मा ने सीधे पैसे नहीं लिए। उन्होंने रिश्वत की रकम पकड़ने के लिए अपने उपयंत्री शोभित मिश्रा को आगे कर दिया। जैसे ही उपयंत्री ने पैसे हाथ में लिए, लेनदेने का इशारा मिलते ही ईओडब्ल्यू की टीम ने उसको धर दबोचा।

धुलवाने पर रंग गए हाथ, गुलाबी हो गया पानी

जानकारी अनुसार ईओडब्ल्यू टीम ने जब उपयंत्री के हाथ केमिकल से धुलवाए, तो उसका रंग गुलाबी हो गया। इस पूरी कार्रवाई को डीएसपी उमा नवल आर्य और उनकी टीम ने अंजाम दिय। फिलहाल दोनों आरोपियों पर भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत मामला दर्ज कर लिया गया है।

सिर में गोली लगने से तीसरी के छात्र की मौत

भोपाल में बालकनी में खून से लथपथ बेहोश मिला था, घर में बाहरी युवकों का आना-जाना था

भोपाल (नप्र)। भोपाल के गौतम नगर में तीसरी कक्षा में पढ़ने वाले छात्र की सिर में गोली लगने से मौत हो गई। परिजनों ने पुलिस को बताया कि बच्चा अचेत अवस्था में घर की बालकनी में खून से लथपथ मिला था।

शुक्रवार रात करीब 1:50 बजे परिजनों ने बच्चों को देखा और इलाज के लिए अस्पताल ले गए। कमला नेहरू हॉस्पिटल में शनिवार सुबह करीब 11 बजे उसकी मौत हो गई। पुलिस ने मर्ग कायम कर लिया है। बॉडी का पीएम कराया जा रहा है।

गौतम नगर टीआई महेंद्र सिंह ठाकुर के मुताबिक, 12 वर्षीय इब्राहिम पुत्र रिजवान लाला जेपी नगर में रहता था। उसके पिता बिल्डिंग मटेरियल सप्लाई का काम करते हैं। देर रात अस्पताल से मिली सूचना के बाद पुलिस मौके पर पहुंची थी। जहां परिजनों ने बताया की बालकनी में अचेत अवस्था में बच्चा मिला था। आसपास खून बिखरा हुआ था। आनन फानन में उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया।

एफएसएल की टीम ने स्पॉट का मुआयना किया

बच्चे की मौत के बाद शनिवार सुबह एफएसएल की टीम मौके पर पहुंची और स्पॉट का मुआयना किया। वहीं पुलिस की अब तक की जांच में यह साफ हुआ है कि बच्चे के घर के बाहर आमतौर पर देर रात तक बाहरी युवकों का आना-जाना रहता था। उसके पिता से मेलजोल के लिए बड़ी संख्या में बाहरी युवक आते थे।

इन पांच सवालों के जवाब अब तक नहीं मिले

- बच्चा आधी रात को बालकनी में क्यों था?
- फायरिंग घर के अंदर से हुई या बाहर से?
- बालकनी में गोली कैसे लगी?
- घर के बाहर रात में कौन लोग आते थे?
- बंदूक किसकी थी?

गाय के पोस्टर से बताया-भारत तीसरा बड़ा बीफ एक्सपोर्टर

भोपाल में बोर्ड क्लब पर डेयरी उद्योग के विरोध में वीगन समूहों ने किया प्रदर्शन

भोपाल (नप्र)। भोपाल में हाल ही में 26 टन मांस पकड़े जाने की घटना के बाद रविवार को बोर्ड क्लब पर वीगन समूह के लोगों ने जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम के जरिए लोगों को वीगन बनने का संदेश दिया गया और डेयरी व पशु उत्पादों से जुड़े मुद्दों को सामने रखा गया।

कार्यक्रम स्थल पर गाय का एक बड़ा पोस्टर लगाया गया था, जिस पर भारत को दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा बीफ एक्सपोर्टर देशों में शामिल बताया है। इस डिस्प्ले के माध्यम से आयोजकों ने पशु उद्योग से जुड़े आंकड़ों और उनके सामाजिक प्रभावों पर लोगों का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की।

जंजीरों में बंधे जानवरों की तस्वीरों से दी पीड़ा की झलक- बोर्ड क्लब पर लगाए गए अन्य पोस्टरों में जंजीरों में बंधे, तड़पते और परेशान जानवरों की तस्वीरें दिखाई गईं। इन तस्वीरों के जरिए वीगन समूह के लोगों ने यह संदेश देने का प्रयास किया कि भोजन और उपभोक्ता विकल्पों का जानवरों के जीवन पर सीधा असर पड़ता है।

राहगीरों से रुक-रुक कर होती रही बातचीत- कार्यक्रम के दौरान बड़ी संख्या में लोग पोस्टर देखकर रुके और वीगन समूह के सदस्यों से बातचीत की। इस दौरान वीगन जीवनशैली, पशु उत्पादों के विकल्प और इसके सामाजिक व नैतिक पहलुओं को लेकर चर्चा की गई।

ग्राउंड लेवल पर काम करने का दावा

वीगन समूह से जुड़े अयान अली सिद्दीकी ने बताया कि कार्यक्रम का उद्देश्य केवल संदेश देना नहीं, बल्कि लोगों को सोचने पर मजबूर करना है। उन्होंने कहा कि वीगन समूह इस मुद्दे पर लगातार ग्राउंड लेवल पर काम कर रहा है और अलग-अलग माध्यमों से जागरूकता फैलाने की कोशिश की जा रही है।

टकराव नहीं, संवाद पर जोर

वीगन समूह के लोगों का कहना है कि उनका मकसद किसी तरह का विरोध या टकराव खड़ा करना नहीं है। वे चाहते हैं कि लोग अपने खान-पान से जुड़े फैसलों पर विचार करें और पशुओं के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण अपनाएं।

पुस्तक समीक्षा

डॉ. लोकेन्द्र सिंह
समीक्षक

जलकुंभी से भरी नदी में: संवेदनाओं और सरोकारों का बोध

युवा कवि पुरु शर्मा की कविताओं का फलक विस्तृत है। इनमें गाँव की सोंधी महक है, तो शहर की दहलीज पर छूटती संवेदनाओं की कसक भी। इनमें विरासत का गौरव है, तो 'नदियों का कत्ल करने वाली पीढ़ी' के प्रति तीखा आक्रोश भी। सुप्रसिद्ध कवि डॉ. हरिओम पवार ने सही रेखांकित किया है कि पुरु प्रतिदिन के जिन विषयों को उठाते हैं, अपनी लेखनी से उन्हें ऐसा विस्तार देते हैं कि पाठक विस्मित होकर सोचने पर विवश हो जाता है। इस संग्रह की एक मुख्य अंतर्धारा 'लौटने' की है– गाँव की ओर, प्रकृति की ओर और अपने पुरखों के मूल्यों की ओर। जैसा कि राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष इंदुशेखर तत्पुरुष ने टिप्पणी की है– 'यह लौटना केवल व्यक्तिगत नॉस्टेल्जिया नहीं है, बल्कि यह एक गहरी 'आध्यात्मिक–सांस्कृतिक तृषा' है, जो व्यक्ति, प्रकृति, समाज और परमात्मा के पारस्परिक सहज संबंधों के विच्छिन्न होने से उत्पन्न होती है '।

हिन्दी साहित्य के विस्तृत आकाश में जब कोई युवा हस्ताक्षर अपनी पहली कृति के साथ उपस्थित होता है, तो उससे कई उम्मीदें जुड़ जाती हैं। अशोकनगर, मध्यप्रदेश के युवा कवि पुरु शर्मा का पहला काव्य संग्रह 'जलकुंभी से भरी नदी में' उन उम्मीदों पर न केवल खरा उतरता है, बल्कि भविष्य के प्रति आश्वस्त भी करता है। यह संग्रह एक ऐसे युवा मन का दर्पण है जो अपने अध्ययन और समाज के प्रति गहरी संवेदनशीलता के धागों से बुना गया है। पुरु की कविताओं में कोमलता का अहसास है। अपने समय की पीढ़ी से जनसरोकारों पर सीधा संवाद है। पर्यावरण संरक्षण की चिंता उनकी प्राथमिकताओं में शामिल है। अपनी विरासत को लेकर गौरव की अनुभूति है। अपनी कविता के माध्यम से पुरु साहित्य के धुंरधरों से साहित्य के धर्म की बात करते हैं। कहना होगा कि पुरु शर्मा की कविताएँ केवल व्यक्तिगत अनुभूतियों का बयान नहीं हैं, बल्कि वे अपने समय, समाज, संस्कृति और पर्यावरण के प्रति एक सजग नागरिक की चिंताएँ हैं। संग्रह के शीर्षक से ही पर्यावरण के प्रति कवि का गहरा सरोकार स्पष्ट होता है। एक युवा कवि का अपने देश और संस्कृति के प्रति ऐसा अनुराग देखकर सुखद आश्चर्य होता है।

युवा कवि पुरु शर्मा की कविताओं का फलक विस्तृत है। इनमें गाँव की सोंधी महक है, तो शहर की दहलीज पर छूटती संवेदनाओं की कसक भी। इनमें विरासत का गौरव है, तो 'नदियों का कत्ल करने वाली पीढ़ी' के प्रति तीखा आक्रोश भी। सुप्रसिद्ध कवि डॉ. हरिओम पवार ने सही रेखांकित किया है कि पुरु प्रतिदिन के जिन विषयों को उठाते हैं, अपनी लेखनी से उन्हें ऐसा विस्तार देते हैं कि पाठक विस्मित होकर सोचने पर विवश हो जाता है। इस संग्रह की एक मुख्य अंतर्धारा 'लौटने' की है- गाँव की ओर, प्रकृति की ओर और अपने पुरखों के मूल्यों की ओर। जैसा कि राजस्थान साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष इंदुशेखर तत्पुरुष ने टिप्पणी की है- 'यह लौटना केवल व्यक्तिगत नॉस्टेल्जिया नहीं है, बल्कि यह एक गहरी 'आध्यात्मिक-सांस्कृतिक तृषा' है, जो व्यक्ति, प्रकृति, समाज और परमात्मा के पारस्परिक सहज संबंधों के विच्छिन्न होने से उत्पन्न होती है'।

कवि पुरु शर्मा स्वयं अपने आत्मकथ्य में मानते हैं कि कविता मात्र आत्माभिव्यक्ति नहीं, बल्कि शताब्दियों के संचित ज्ञान और सांस्कृतिक मनीषा का निचोड़ है। उन्होंने लिखा है- 'जब कोई कवि लिखता है तो मात्र आत्माभिव्यक्ति नहीं करता, कवि अपनी सांस्कृतिक मनीषा को, शताब्दियों के संचित ज्ञान और अनुभवों के निचोड़ को व्यक्त करता है। कविता मनुष्यता के पक्ष में ऐसी सशक्त आवाज है, जो निरंतर विद्रूप को तोड़कर उसे ज्यादा मानवीय और सुंदर बनाने का काम करती है '।

'जलकुंभी से भरी नदी में' में कुल 47 कविताएँ विविध रंगों से सजी हैं। पर्यावरण संरक्षण पर उनकी चिंता 'नदियों का कत्ल करने वाली पीढ़ी' कविता में बहुत मारक ढंग से उभरती है- 'पास कोई शहर है जो आहिस्ता-आहिस्ता निगल रहा है

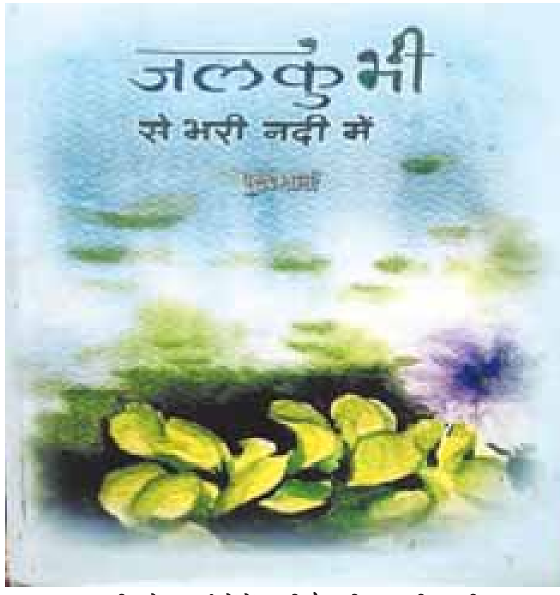

नदी को... दर्द में रेंग रही है नदी '। वहीं दूसरी ओर, यह संग्रह साहित्य और पुस्तकों के महत्व को बहुत खूबसूरती से स्थापित करता है। डिजिटल युग में 'अदृश्य पुरखे' और 'किताबें' जैसी कविताएँ पुस्तकों को हमारी सबसे विश्वसनीय शरणस्थली और रेगिस्तान में छांव के रूप में चित्रित करती हैं। 'अदृश्य पुरखे' में उनके भावों से जुड़कर किताबों के महत्व को समझने की कोशिश कीजिए- 'हम जब भी कभी/ थककर, हताश या टूटकर गिरते हैं / हमेशा किताबों की हथेलियों में ही गिरते हैं। / किताबें हमारे लिए अदृश्य पुरखे हैं / उनकी ममत्व की गोदी / हमारे लिए सबसे विश्वसनीय शरणस्थली है।' इसी प्रकार 'किताबें' बाँचकर देखिए, वे हमसे क्या कहना चाहती हैं- 'रेगिस्तान में छांव-सी हैं किताबें / दिल में गाँव सी हैं किताबें / यादों के समंदर में / नाव सी हैं किताबें।'

घोर निराशा के दौर में पुरु शर्मा की कविताएँ उम्मीद का दामन नहीं छोड़तीं। 'उम्मीद का उजाला' जैसी रचनाएँ उनके सकारात्मक दृष्टिकोण का प्रमाण हैं- 'माना रात घनी है, घोर तमस से भरी है / उजियारी भोर के सामने कई चुनौतियां धरी हैं। / तुम सूरज पर ऐतबार बनाए रखना / उम्मीदों के दीपक जलाए रखना।'

एक युवा मन प्रेम के अहसास से अछूता कैसे रह सकता है? पुरु शर्मा के इस काव्य संग्रह में प्रेम रस में पगी कविताएं भी पाठकों मन को सुकून देती हैं। 'अधूरा प्रेमपत्र' में प्रेम में इंतजार की मिठास को उन्होंने बहुत सहजता से व्यक्त किया है। 'लास्ट बेंच' पर बैठकर उन्होंने कभी 'प्रेम की इबारत' लिखी थी, उसे 'मोहब्बत' तक पहुँचाने का काम बहुत चातुर्य के साथ कवि ने किया है।

पुरु शर्मा की भाषा बेहद सहज और सरल है, जो सीधे पाठक के दिल में उतरती है। उनमें युवा मन का अल्हड़पन और एक गंभीर अध्ययेता की परिपक्वता का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है। वे अपनी बात कहने के लिए आडंबर का सहारा नहीं लेते, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर अलंकृत भाषा-शैली का कौशल दिखाने से भी नहीं चूकते। कुल मिलाकर, 'जलकुंभी से भरी नदी में' एक समर्थ युवा कवि का दमदार आगाज है। यह काव्य संग्रह बताता है कि नई पीढ़ी अपनी जड़ों से कटी नहीं है, बल्कि वह आधुनिकता के शोर में अपनी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना का नया सूर्योदय तलाश रही है। साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश के सहयोग से प्रकाशित यह 74 पृष्ठीय पुस्तक हिन्दी काव्य प्रेमियों के लिए पठनीय और संग्रहणीय कृति है। यदि यह पुस्तक आपके संग्रह में रहेगी तो जब-तब आप इन कविताओं को गुनगुना सकते हैं। इन्हें पढ़कर आनंदित हो सकते हैं।

पुस्तक : जलकुंभी से भरी नदी में (काव्य संग्रह)
कवि : पुरु शर्मा
प्रकाशक : संदर्भ प्रकाशन, भोपाल
मूल्य : 250

कविता

कुसुमाकर

दिनेश परते

ओस नहाये ठिठुरन ओढ़े, जाने को है शिशिर लजाकर
नवरंग पहने, नवपल्लव संग, नवकुसुमित आया कुसुमाकर
बहके चहके पंख पखेरू, बौराई सी पवन चले
चीर कुहासा, बाल किरण लो झांके फिर से गगन तले
स्वर्णिम आस करें गलबहियां, आलिंगन अनजाने ही
स्मित मंद अधर पर लेकर स्वागतमय हो नयन ढले

राह तके ऋतुराज मदन का, आंगन बंदनवार सजाकर
नवकुसुमित आया कुसुमाकर।

ठिठक गई तन की अंगडाई, अभिवादन की आहट से
मन की जकडन हुई दूर फिर मौसम की गरमाहट से
खुले द्वार, परदे, वातायन नूतन पवन बुलाने को
फेक रजाई, मफलर, स्वेटर, मुक्त हुई अकुलाहट से

चलो चलें, घूमें मनचाहे, मनपतंग के पंख लगाकर
नवकुसुमित आया कुसुमाकर।

सम्बंधों की चादर झीनी, लगता साथी मीत नया सा
वही पुरातन अमराई पर, कूजनिका का गीत नया सा
कहां बदलते सरगम के स्वर, राग-वाद्य-संवाद पुराने
हृदय तारसप्तक है झंकृत, रोम रोम संगीत नया सा

मनभाये मधुमास मनोहर, रागबसंती तान सुनाकर
नवकुसुमित आया कुसुमाकर।

ताशे ढोल पखावज डमरू, बाजे चंग-मृदंग कहीं
पुंगव पुष्ट मुष्टिका भींचे, खीचे डोर तुरंग कहीं
कलरव तांडव धरा-गगन में, दिग दिग नाद-निनाद भरा
झूमे मोर चकोर कहीं पर, नाचे मस्त मलंग कहीं।

छटा देख विस्मृत हैं सारे, नभ तारागण चंद्र दिवाकर
नवकुसुमित आया कुसुमाकर।

भागती ज़िंदगी में आत्मबोध का सहारा

दृष्टिकोण

मेघा राठी
लेखक साहित्यकार हैं।

आज का मनुष्य बाहरी रूप से जितना व्यस्त है, भीतर से उतना ही खाली और थका हुआ महसूस करता है। सुबह से रात तक भागदौड़ है–काम की, जिम्मेदारियों की, अपेक्षाओं की। हर कोई कुछ न कुछ साबित करने में लगा है-अच्छा कर्मचारी, अच्छी पत्नी, अच्छी माँ, अच्छा पति या पिता या फिर बेटा अथवा सफल व्यक्ति। इस कोशिश में आदमी धीरे-धीरे खुद से दूर होता चला जाता है। उसे लगता है कि उसकी कीमत उसके पद, उसकी सफलता, दूसरों की स्वीकृति से तय होती है। ऐसे समय में वेदांत का सूत्र वाक्य 'अहम् ब्रह्मास्मि' एक पुराने ग्रंथ का वाक्य नहीं बल्कि आज के जीवन के लिए गहरी और जरूरी समझ बन सकता है।

अहम् ब्रह्मास्मि का सीधा और सरल अर्थ है, मैं केवल यह शरीर, यह नाम या यह पहचान नहीं हूँ। मैं वह चेतना हूँ जो इन सबको जान रही है। अक्सर लोग इस वाक्य को गलत अर्थों में लेते हैं, मानो यह अहंकार को बढ़ाने वाली बात हो। जबकि सच्चाई यह है कि यह अहंकार को गलाने वाला सूत्र है। यह यह नहीं कहता कि 'मैं सबसे बड़ा हूँ या भगवान हूं', बल्कि यह कहता है कि 'मैं खुद को जितना छोटा समझ रहा हूँ, उससे कहीं अधिक व्यापक हूँ। '

आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी समस्या यही है कि हम खुद को बहुत सीमित दायरों में बाँध लेते हैं। कोई बात बिगड़ जाए तो लगता है कि मैं ही गलत हूँ। कोई असफलता मिले तो लगता है कि मैं ही नाकाम हूँ। कोई रिश्ता टूटे तो लगता है कि मेरी ही कमी है। अहम् ब्रह्मास्मि की समझ धीरे-धीरे यह सिखाती है कि जीवन में घटने वाली हर घटना मैं नहीं हूँ। मैं वह हूँ जो इन घटनाओं को देख रहा है, झेल रहा है, उनसे सीख रहा है। यह छोटा-सा फर्क मन को बहुत हल्का कर देता है।

जब व्यक्ति यह समझने लगता है तो उसकी प्रतिक्रियाएँ बदलने लगती हैं। आज हम छोटी-छोटी बातों पर बहुत जल्दी आहत हो जाते हैं। कोई ऊँची आवाज़ में बोल दे, कोई अनदेखा कर दे, कोई अपेक्षा पूरी न करे तो भीतर उथल-पुथल मच जाती है। अहम् ब्रह्मास्मि का भाव यह सिखाता है कि हर बात को सीधे अपने अस्तित्व से मत जोड़ो। जो कहा गया, जो किया गया, वह सामने वाले की स्थिति और समझ का परिणाम भी हो सकता है। यह सोच व्यक्ति को हर समय लड़ने की हालत से बाहर निकालती है।

यह सूत्र असफलता और सफलता दोनों को देखने का नजरिया बदल देता है। आज सफलता को ही जीवन का मापदंड बना लिया गया है। सफल हो तो सम्मान, असफल हो तो तिरस्कार–दूसरों की ही नहीं अक्सर खुद की नजरों में भी। जब व्यक्ति यह समझने लगता है कि मैं अपनी उपलब्धियों से बड़ा हूँ, तो सफलता उसे घमंडी नहीं बनाती और असफलता उसे तोड़ती नहीं है। वह कोशिश करता है, मेहनत करता है लेकिन खुद को परिणाम से पूरी तरह नहीं बाँधता। इससे जीवन में स्थिरता आती है।

रिश्तों में यह समझ और भी ज़रूरी हो जाती है। बहुत से रिश्ते इसलिए बोझ बन जाते हैं क्योंकि हम सामने वाले से यह उम्मीद करने लगते हैं कि वह हमें खुश रखे, समझे, पूरा करे। जब ऐसा नहीं होता, तो शिकायतें बढ़ती हैं, दूरी आती है। अहम् ब्रह्मास्मि का भाव यह सिखाता है कि मेरी खुशी की पूरी जिम्मेदारी किसी और पर नहीं डाली जा सकती। जब व्यक्ति भीतर से थोड़ा संतुलित होता है तो वह रिश्तों में कम माँगता है और ज़्यादा समझता है। इससे रिश्तों में सहजता आती है।

कामकाजी जीवन में भी यह दृष्टि बहुत काम आती है। ऑफिस में तुलना, प्रतिस्पर्धा और असुरक्षा आज आम बात है। हर कोई किसी से आगे निकलने की होड़ में है। जब व्यक्ति खुद को केवल पद या पहचान से नहीं जोड़ता तो आलोचना उसे भीतर तक नहीं हिला पाती। वह अपनी क्षमता के अनुसार काम करता है, बिना लगातार डर में जीए। इससे न सिर्फ मानसिक तनाव कम होता है, बल्कि काम की गुणवत्ता भी बेहतर होती है।

अक्सर यह सवाल उठता है कि क्या यह सोच व्यवहार में सचमुच काम करती है या सिर्फ किताबों तक सीमित है। सच यह है कि यह कोई जादू नहीं बल्कि धीरे-धीरे विकसित होने वाली समझ है। जैसे शरीर को स्वस्थ रखने के लिए रोज़ कुछ न कुछ करना पड़ता है वैसे ही मन के लिए भी अभ्यास चाहिए। दिन में कुछ पल खुद को याद दिलाना कि मैं इस भावना, इस डर, इस परिस्थिति से बड़ा हूँ–यही अभ्यास है। धीरे-धीरे मन इस दिशा में ढलने लगता है।

यह सोच जीवन से भागने की शिक्षा नहीं देती। न ही यह कहती है कि सब कुछ छोड़कर अलग हो जाओ। यह कहती है कि जीवन में रहो, जिम्मेदारियाँ निभाओ लेकिन भीतर से खुद को उनसे पूरी तरह बाँधो मत। दुख आए तो उसे महसूस करो, लेकिन उसे अपनी पूरी पहचान मत बनने दो। यही आंतरिक स्वतंत्रता है।

आज जब मानसिक तनाव, अवसाद और अकेलेपन की समस्याएँ बढ़ रही हैं तब केवल बाहरी समाधान पर्याप्त नहीं हैं। हमें भीतर की दिशा में भी देखना होगा। अहम् ब्रह्मास्मि इसी भीतर की ओर देखने की प्रेरणा देता है। यह हमें याद दिलाता है कि हम सिर्फ परिस्थितियों का शिकार नहीं हैं बल्कि वह चेतना हैं जो हर परिस्थिति को समझ सकती है।

वास्तव में यह सूत्र कोई नारा नहीं, बल्कि जीवन को देखने का एक गहरा और मानवीय तरीका है। यह व्यक्ति को नम्र बनाता है, क्योंकि अहंकार कम होता है और मजबूत भी बनाता है क्योंकि भीतर एक स्थिर आधार मिल जाता है। आधुनिक जीवन की भागदौड़ में यदि यह भाव थोड़ा-सा भी उतर जाए, तो जीवन बोझ नहीं, बल्कि समझ के साथ जिया गया अनुभव बन सकता है।

व्यंग्य

सुदर्शन कुमार सोनी
लेखक व्यंग्यकार हैं।

बजट : समर्थन व विरोध के तीरों के तरकश तैयार

आम बजट आने वाला है। यह सूचना मिलते ही देश में वैसी ही हलचल शुरू हो जाती है जो शादी की तारीख तय होते ही रिश्तेदारों में होती है–सबको उम्मीदें भी हैं और शिकायतों की तैयारी भी। हर साल की तरह इस बार भी बजट एक नहीं, कई रूपों में आएगा। संसद में एक, टीवी स्टूडियो में दूसरा, सोशल मीडिया पर तीसरा और आम आदमी की जेब में चौथा, पांचवा विपक्ष का। बजट से पहले हर बार की तरह पूरे देश के प्रिंट, इलेक्ट्रानिक, व सोशल मीडिया में उम्मीदों का बाजार पूरी तरह गर्म है।

बजट पर फौरी प्रतिक्रिया के मामले में पक्ष व विपक्ष उस छात्र की तरह का व्यवहार करते हैं जो कि परीक्षा का प्रश्नपत्र आने के पहले ही उत्तर लिखना शुरू कर देता है।सत्ताधारी दल के नुमाईंदे पहले से आश्वस्त है कि यह बजट ऐतिहासिक होगा। ऐसा बजट जो विकास की रफ्तार बढ़ाएगा, युवाओं को उड़ान देगा, किसानों को संबल देगा, मजदूरों को सुरक्षा देगा और गृहणियों के सपनों को रसोई से निकालकर अर्थव्यवस्था में पहुँचा देगा। शब्दों में इतना विकास होगा कि अगर काग़ज़ भारी होता, तो बजट भाषण उठाने के लिए क्रेन लगानी पड़ती।

बजट तैयार करने में वित्तमंत्री व उनकी टीम को रतजगा करना पड़ता है पर विपक्ष एक मिनट में इसकी समीक्षा कर देता है। बजट पेश होने से पहले ही उसे पता है कि इसमें क्या-क्या कमी होगी। यह बजट युवाओं को ठगने वाला होगा, किसानों को झुनझुना पकड़ाने वाला, गृहणियों की परेशानियाँ न समझने वाला, बेरोज़गारों की सुध न लेने वाला और अमीरों के लिए विशेष रियायतों से भरा हुआ। सत्ताधारी के लिए बजट विकास है, विपक्ष के लिए षड्यंत्र। विपक्ष की खामियों की व सत्तारूढ़ दल की खूबियों की सूची तैयार है। जैसे ही सत्तारूढ़ दल कहेगा यह बजट गरीबों का है तो विपक्ष का जवाब होगा कि पर यह समझ में केवल अमीरों को आ रहा है।

बजट के दिन संसद से ज़्यादा भीड़ टीवी चैनलों में होती है। एंकर ऐसे सवाल पूछते हैं जैसे बजट नहीं, किसी मैच का फाइनल हो। एक्सपर्ट बताते हैं कि यह बजट गेम चेंजर है, लेकिन साथ में यह भी जोड़ते हैं- 'बशर्ते ज़मीनी स्तर पर लागू हो।'

यानी लागू न हुआ तो गलती बजट की नहीं, ज़मीन की होगी। एक्सपर्ट अलग-अलग राय बताएंगे। जैसे

निवेश तो हुआ है लेकिन नौकरियां पैदा होने का संकेत नही मिलता तो दूसरा कहेगा निवेश इस तरह से प्रावधानित है कि नौकरियों की तो झड़ी लगना चाहिए। कोई कहेगा कि शिक्षा में एलोकेशन अभी भी विकसित देशों की जीडीपी के प्रतिशत के मान से होने वाले एलोकेशन से काफी कम है। यही बात कोई अन्य चिकित्सा के लिए कहेगा।

बजट के बाद असली खेल शुरू होता है–क्या मिला और क्या नहीं मिला।

मिडिल क्लास ढूँढता है टैक्स में राहत, किसान समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी, युवा नौकरी की घोषणा, महिलाएँ महँगाई से राहत और बेरोज़गार बस एक लाइन– 'रोज़गार के अवसर बढ़ेंगे।'

युवाओं को सपना मिलता है, अलार्म नहीं। गृहणियों को सम्मान मिलता है, सिलेंडर सस्ता नहीं। बेरोज़गारों के लिए बजट में हमेशा भविष्य काल होता है। बजट में सबके लिए कुछ होता है, बस जरूरत के लिए नहीं। राहत छोटी लगती है भाषण बड़ा। टैक्स स्लैब बदल जाते हैं पर टैक्स देने वाले नही बदलते।

हर बजट में कुछ शब्द स्थायी होते हैं–समावेशी विकास, आत्मनिर्भर भारत, अमृतकाल, विज़न 2047 ये शब्द ऐसे हैं जैसे नमक–हर व्यंजन में डाल दिया जाता है, चाहे ज़रूरत हो या नहीं। आम आदमी सोचता है–आज की दाल में नमक कम है, लेकिन चिंता की बात नही हौसला बनाए रखें 2047 तक स्वाद आ जाएगा।

सबसे दिलचस्प स्थिति गृहणियों की होती है। बजट में उनका ज़िक्र ज़रूर होता है, लेकिन रसोई का बजट हर बार उनसे छूट जाता है। कितने बजट पेश हुए लेकिन कोई उसकी रसोई का बजट नही बना पाया। बेरोजगारों को हर बार आश्वासन मिलता है कि अर्थव्यवस्था मज़बूत हो रही है, और मज़बूत अर्थव्यवस्था में रोज़गार अपने आप पैदा हो जाता है। यह 'अपने आप' देश का सबसे मेहनती शब्द है।

और अमीरों के लिए चुपचाप राहत, जिस पर ज़ोर से कोई बात नहीं होती। बजट में आंकड़ो के शोर प्रदूषण से परेशान हो सच कंही दूर चला जाता है।

फिर कुछ दिन बाद यह बहस शुरू होती है–उम्मीद थी, पर पूरी नहीं हुई। यह मिला, वो नहीं मिला। बजट में घोषणाएँ तुरंत, असर धीरे-धीरे। बजट के बाद सबसे ज़्यादा कमाई डिबेट करने वाले करते हैं। और धीरे-धीरे बजट फाइलों में चला जाता है, जब तक अगला बजट फिर से उम्मीदों की नई किश्त लेकर नहीं आ जाता। हर बजट ऐतिहासिक होता है, बस इतिहास बनते-बनते रह जाता है। इस देश में सबसे स्थायी चीज़–अगले बजट की उम्मीद।

कुल मिलाकर, बजट एक सामूहिक भावनात्मक आयोजन है–जिसमें ताली भी बजती है, आलोचना भी होती है । अंततः बजट एक आर्थिक दस्तावेज़ कम और राजनीतिक कथा ज़्यादा बन चुका है–जिसे सत्ता सफलता की कहानी बताती है, विपक्ष असफलता की सूची, और जनता धैर्य की परीक्षा।

और हर साल की तरह निष्कर्ष वही–बजट आया, बहस हुई, वादे बोले गए... क्या बदलता है आम आदमी फिर नून तेल के लिए बसों व लोकल में धक्का खाने, मध्यम वर्ग सीमित आय व उससे अधिक व्यय के चक्रव्यूह में अपनी जरूरतें पूरी करने, युवा व बेरोजगार अच्छे जीवन व नौकरी की आशा व गहणियां चलो इस बार भी नही तो अगली बार के फेर में पुराने ढर्रे पर जीवन जीने मजबूर हो जाते हैं। सब अगली तारीख़ का इंतज़ार करने लगते हैं। मुकदमा हो या बजट आशा हमेशा अगली तारीख पर ही आ टिकती हैं

आशा से आकाश थमा है अतः गंगाधर आशा में है कि इस बार का बजट सही में आम आदमी के लिए उसकी दशा बदलने का जैकपाट साबित होगा।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लोक कला, चौक पुरना और उसके विविध रूप

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

शास्त्रीय कला निर्मिति हेतु शास्त्रों का ज्ञाता बनने का प्रयास करना पड़ता है जबकि लोक कला भाई, बहन, माँ, बाप के आपसी प्रेम जैसी है जहाँ रिश्तों हेतु प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं होती है बल्कि वो खून में ही होता है मतलब लोक कला भी समाज में बसे लोगों के खून में है जो समय और अवस्था के साथ कदमताल मिला कर चलती है, सुंदर-असुंदर से परे होकर, परिणाम के परवाह से इतर। सच्चाई तो ये है कि कृतियाँ सुंदर हैं या असुंदर यह देखने वालों के नेत्रों और दृष्टिकोणों पर निर्भर करता है। लोक कलाकारों में बड़ी अच्छी बात ये होती है कि वो दम्भ से परे होते हैं बिल्कुल ही जमीन से जुड़े हुए, उनके भाव, रंगों के जमीनी होने के जैसे। लोक कला को सीखने हेतु किसी स्कूल और ट्यूशन की आवश्यकता नहीं होती? ये ऐसे ही पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ती रही है और बड़े स्तर पर आगे बढ़ी है और सृष्टि के सृजन के साथ से ही चली आ रही है और सब से बड़ी बात ये है कि सभी के जीवन में अहम स्थान भी रखती है बिना इसके जीवन नीरस सा हो जाता है। रीति-रिवाज के अनुसार ही सही हम अपने समाज के कला के साथ जुड़े होते हैं और यही होती है लोक कला। जमीन और दीवार पर अंगुली, बांस की कैनी, रूई, सूखा कपड़ा और ऐसे ही आसानी से प्राप्त हो जाने वाली वस्तुओं के साथ ही चावल, दाल, आंटा, गाय के गोबर जैसे चीजों से आसानी से बन जाने वाले इन चित्रों के भाव बहुत ही सरल भी और गूढ़ भी होते हैं जिसके पीछे प्रथा और वर्षों पुरानी कहानियाँ जुड़ी होती है। चर्चा जब पूरे देश के लोक कलाओं पर होगी तो बात और विस्तार से होगी फिलहाल हम अवधी और उत्तर प्रदेश की कला पर ही चर्चा कर रहे हैं जहाँ एक से बढ़कर एक कला का जिक्र है और कुछ के शुरुआती स्थान, रीति-रिवाज, समय पर संदेह भी हो सकता है कारण एक ही जैसी कला एवं एक ही समय पर अनेक जगहों पर उपस्थित है तो कहीं उस पर पहले लिखा या सहेजा जा चुका है तो कहीं बाद में या फिर नहीं भी सहेजा जा सका है पर सहेजने ना सहेजने से कला के ना होने की बात तो नहीं हो सकती। लोक कला परिवार में पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने आप आगे बढ़ी है। अपने यहाँ के लिए कहा गया है कि 'कोस-कोस पे बदलै पानी, चार कोस पे बानी।' तो क्या कोई अपने नल के पानी को अपना कहने में हिचकता है या कहता है कि ये तो दूसरे प्रदेश का पानी है? नहीं कहता है। मतलब जो रीति-रिवाज हमारे यहाँ है, वो पहले से ही रहा होगा, हमारे समाज और संस्कृति में रहा होगा, गाँव, शहर, जिले और प्रदेश में रहा होगा और देश में भी। हाँ इतना अवश्य रहा होगा कि गाँव से शहर या शहर से प्रदेश तक पहुँचने में उसके रूपों में बहुत परिवर्तन हुआ रहा होगा। रूप भले बदल गया होगा पर परिवार तो वही रहा होगा। एक ही परिवार के दस लोग दस चेहरे वाले होते हैं तो क्या मुखिया से किसी का रिश्ता कम आँका जा सकता है क्या? नहीं। मानना भी नहीं चाहिए। यहाँ हमें इस भ्रम से भी दूर रहना है कि फला कला हमारे यहाँ पहले आई या आपके यहाँ बहुत पीछे। लोक कला परिवार के साथ होती है और परिवार के अलग-अलग सदस्य अलग-अलग जगह पर भी जाएंगे तो कला वहाँ-वहाँ भी जाएगी, कहीं अपने मूल रूप में तो कहीं वर्तमान परिस्थितियों के हिसाब से कुछ परिवर्तित अवस्था में ही सही। ये पहले और बाद में के चक्कर से या अपने-पराए से ऊपर उठकर बात करने में ही लोक कला और हम सभी की भलाई है। बात चौक पुरना का है तो ये भी सत्य है कि ये अपने पूरे देश में फैला है या कह सकते हैं बाहर भी होगा, शत-प्रतिशत होगा ही बस नाम अलग-अलग होने की गुंजाइश है। रंगोली, आपना, अहपन, अल्पना, चौक पुरना ये सभी एक ही कला के बहुधा रंग हैं।

बात चौक पुरना और उसके विधि-विधान की
मचियइ बइठी सासू, बहू के मेहना मारइं।
बहू कहां बसे भैया तोहार, कभंउ नाहीं आयेन।।

जिनि सासू अंगना लिपावऽ, तऽ चउक पुरावऽ।
सासू हम नाहीं बइठब चउकवा, बिरन नाहीं आयेन।।

बहिनी जाइके देखऽ भैया के डगरिया, केतनि दुरियां बाटेन्।
दुअरे घोड़ ढेहनानेन, बदर घहरानेन।
बहिनी भैया त पहुंचे दुअरवां, त छतिया जुड़ानिन

अब सासू अंगना लिपावऽ त चउकऽ पुरावऽ।
सासू अब हम बैठब अंगनवा बिरन मोर आयेन।।

- और दूसरा है कि
गैया के गोबरा मंगायेंव,
त अंगना लिपायेव,
चौक देवाएव।

बहिनी सेहि चौके,
बैठे सतिनरायन बाबा,
ओढ़े पीतांबर
जौ मैं जनती
सतिनरायन बाबा
अंगन मोर अइहैं
बहिनी निहुरि-निहुरि
पंउवा लगतेउ
मगन किछु मंगतेउ

इन दोनों रचनाओं से एक बात तो साफ हो गई कि बिना चौक पुरना के कोई भी शुभ काम नहीं किया जा सकता, शुरुआत ही चौक पुरना से होना है। आइए अब इसके निर्माण प्रक्रिया पर भी बात करें।

चौक पुरना के बनाने में कोई विशेष बात नहीं है बल्कि एकदम आसान है पर बन जाने के बाद उसके रेखा, रंग और भाव पर पूरा का पूरा ग्रंथ लिखा जा सकता है। विंदु जिसको कि सृष्टि को साकार करने वाला माना जा सकता है, जिसका विस्तार हर जगह देखने को मिलता है, रेखा, गोलाई, स्वास्तिक, त्रिकोण, चतुष्कोण, त्रिषूल, कुंभ आदि जगहों पर भी विंदु का महत्व है। चौक पुरने की प्रथा पूरे भारत में विविध रंगों में विराजमान है पर उत्तर प्रदेश में इसकी खूब धूम है। यहाँ हर एक कार्यक्रम, उत्सव और शुभ अवसरों पर आंटा, हरदी, गोबर, जैसे वस्तुओं से बनाने की प्रथा है। चौक बनाने से पहले जगह पर पानी का छींटा मार कर या कहीं-कहीं पानी में गंगाजल मिला कर जगह को पवित्र करने की प्रथा भी है। उसके बाद गाय के गोबर से लिपाई के बाद गेहूं, जौ या चावल के आंटा से इसे बनाने की प्रथा है।

चौक में प्रयुक्त विंदु से बहुत विस्तार की बात है जहाँ विंदु ही ब्रह्माण्ड है वाली बात चरितार्थ होती है। इसके बाद इसी विंदु का सफर स्वास्तिक तक पहुंच जाता है, स्वास्तिक जिसके बारे में ये बात जगजाहिर है कि ये संसार का सबसे शुभ और बढ़िया मांगलिक चिन्ह है, यहाँ चारों रेखाओं को भगवान विष्णु की चार भुजा माना गया है। सीधी और पड़ी रेखा पुरुष, महिला को दर्शाते हैं जिसके बल पर संसार चलायमान है। अलग-अलग ग्रंथों में स्वास्तिक को लेकर अलग-अलग बातें प्रकाश में आती हैं पर सौ बात की एक बात कि चौक पुरना मांगलिक कार्यों हेतु सबसे शुभ है और जिसका प्रयोग अक्सर चौक पुरना में होता है।

स्वास्तिक के चारों तरफ बहुत अधिक संख्या में रेखाओं को खींचने का भी रिवाज है जो सुख-समृद्धि के अधिक विस्तार की परिचायक है। कहीं न कहीं कुंभ का प्रयोग भी जरूरी होता है चौक में। पूर्ण कुंभ मतलब जलमग्न कुंभ, ये परिवार के भरा-पुरा होने की निशानी है, ये सुख-समृद्धि और जिंदगी के पूर्णता की निशानी है। कुंभ में भरा जल जीवन में प्राण की निशानी है। पूरे चौक को जब गहनता से देखा जाता है तो मालूम होता है कि इसमें क्या नहीं है? सबकुछ है यहाँ यथा सूरज, अग्नि, इंद्र, वरुण, सोम, ब्रह्मा, विष्णु, महेश के साथ ही जिंदगी के उतार-चढ़ाव, मनुष्य, स्त्री, धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के साथ ही जिंदगी के चारों आश्रमों का भी जिक्र है। जिंदगी के गूढ़ रहस्यों को उजागर करने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है जिसमें यह बताया जाता है कि सूर्य की भांति चमकते हुए दूसरों के जीवन में भी प्रकाश भरना चाहिए और अपने कर्तव्यों को बकायदा निबाहना चाहिए। गृहस्थ आश्रम के बाद आत्मिक शांति हेतु वानप्रस्थ और संन्यास की तरफ को भी बल की बात है। चित्र गूगल से साभार है।

फ़िराक भेष बदलकर मिलता है अक्सर कोई काफ़िर

रंग ए बनारस

नीतीश मिश्र

लेखक पत्रकार हैं।

आधुनिक भारत के युग निर्माता एवं देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने बनारस के स्वरूप को लेकर कभी कहा था कि 'वाराणसी पूर्व दिशा की एक शाश्वत नगरी है' न केवल भारत के लिए बल्कि पूर्वी एशिया के लिए भी धर्म,शिक्षा और व्यापार के आपसी लोक समन्वय के चलते काशी नगरी का इतिहास राजनितिक इतिहास की बजाए भारतीय सांस्कृतिक इतिहास का एक ऐसा संगम बन गया हैं जहाँ एकांतिक मुक्ति के अलावा सामूहिक मुक्ति का आठों पहर शाश्वत गान होता हैं। बनारस आज भी शिव की नगरी है,कल भी शिव की ही नगरी थी और आने वाले समय में भी शिव की नगरी ही कहलाएगी। क्योंकि काशी के बारे में एक लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि काशी धरती पर नहीं बल्कि भगवान भोलेनाथ के त्रिशूल पर टिकी हुई है। पौराणिक मान्यता के अनुसार कहा जाता है कि धरती का विनाश होने के बावजूद भी काशी अपने समूचे अस्तित्व के साथ मनुष्य द्वारा निर्मित इतिहास पर मुस्कराती हुई आकाश गंगा से अपनी नज़रे मिलाती हुई मनुष्य के अहंकार और उसके उन्माद की औकात बताती रहेगी।

आज काशी के विकास और उसके रिफार्म को लेकर बहस बहुत जोरों -शोरो से चल रही हैं। भक्त और प्रतिभक्त काशी के विकास और रिफार्म को लेकर हवा में केवल मुक्केबाजी करते हुए प्रतीत हो रहे हैं। काशी के विकास को लेकर भक्तो के अपने तर्क हैं और प्रतिभक्तों के अपने। लेकिन सही मायने में देखा जाए तो काशी का विनाश पहली बार नहीं बल्कि इससे पहले भी कई बार हो चुका हैं। अगर हम प्राचीनकाल की बात करें तो काशी के विनाश की पहली उद्घोषणा महाभारत के उद्योग पर्व में इसका उल्लेख मिलता है। जहां भगवान कृष्ण द्वारा वाराणसी के जलाये जाने का उल्लेख मिलता है। विष्णुपुराण में भी काशी के जलाये जाने का उल्लेख मिलता है। विष्णुपुराण की कथा की बात माने तो काशी में पौड्रक नाम का एक वासुदेव था जो लोगों के बहकावे में आकर खुद को सच्चा वासुदेव समझने लगा। यहाँ तक कि वह कृष्ण के पास अपना एक दूत भेजकर कृष्ण को शरनागत होने के लिए सन्देश भेजता है। दूत के इस संदेश से कृष्ण आहत होकर अपना सुदर्शन चक्र काशी के ऊपर छोड़ देते है। इस युद्ध में काशी नरेश की बुरी तरह से हार होती है। कथा में कितनी सच्चाई हैं यह शोध का एक व्यापक विषय हो सकता है। लेकिन अगर समय के बदलते हुए कैनन पर अगर विश्वास किया जाए तो यह लड़ाई वैष्णव बनाम शैवों की प्रतीत होती हैं। वहीं महाभारत के आदिपर्व में भी काशी से जुड़ी हुई कुछ फुटकर बाते सामने आती हैं। काशीराज की पुत्री सार्वसेनी का विवाह भरत दौशयन्त से हुआ था। भीष्म ने काशीराज की तीन पुत्रियों अम्बा, अम्बिका और अंबालिका को स्वयंवर में अपने भाई विचित्रवीर्य के लिए जीता था। महाभारत के भीष्म पर्व से यह भी जानकारी सामने आती है कि भारतवर्ष में काशी और अपरकाशी नाम की दो जातियाँ थी। रामायण में काशी का बहुत कम ही उल्लेख मिलता है उत्तरकाण्ड में पुरुरवस का नाम आया है, इसी कांड में ययाती के पुत्र पुरु को प्रतिष्ठान पर राज्य करते हुए जिक्र किया गया है।

मध्यकालीन पुराणों की माने तो काशी शैव धर्म का सबसे चर्चित केंद्र हुआ करता था। धर्म के अलावा विभिन्न धर्मों की संस्कृति और व्यापार का प्रमुख केंद्र हुआ करता था। शैव धर्म के साथ बौद्ध धर्म और जैन धर्म की भी काशी प्रमुख नगरी रही हैं। ज्ञान प्राप्त होने के बाद महात्मा बुद्ध ने सारनाथ में सबसे पहली बार अपने पांच शिष्यों के साथ आत्म संवाद किया था। बुद्ध का मौन यहीं पर पहली बार टुटा था। इसके अलावा महाजनपद युग में महावीर स्वामी के जन्म से 250 वर्ष पहले यानी ईसा पूर्व आठवीं शताब्दी में जैन तीर्थंकर पाश्वरनाथ का जन्म बनारस में ही हुआ था द्य ऐसा विलक्षण संयोंग शिव की नगरी काशी में ही संभव हो सकती हैं द्य अगर धर्मों का संगम बनारस को कहा जाए तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होनी चाहिए। पुराणों की कथाओं की बात माने तो काशी शिव की प्रधान नगरी रही हैं। पुराण यहाँ तक कहते हैं कि भगवान विष्णु ने शिव को काशी नगरी उपहार में सौंपा था। अग्नि पुराण की बात माने तो काशी का नाम अविमुक्त पड़ा क्योंकि शिव इसे कभी नहीं छोड़ते।

महाभारत में काशी के शैव तीर्थ होने का उल्लेख आरणयकपर्व में आया है। बनारस के पास गंगा और गोमती के संगम पर स्थित मार्कण्डेय तीर्थ का उल्लेख मिलता हैं। वहीं बौद्ध साहित्य में शिव की गणना यक्षो में की गयी हैं। महामायूरी में प्रधान यक्ष को महाकाल का दर्जा दिया गया हैं

जो कि शिव का ही एक नाम है द्य जो भी हो यक्षों का सम्बन्ध बनारस से आदि काल से जुड़ा हुआ है द्य वहीं जैन साहित्य से यह भी जानकारी मिलती है कि बनारस में यक्ष पूजा बहुत लम्बे समय से प्रचलित थी द्य मत्स्यपुराण की माने तो बनारस में यक्ष नामक हरिकेश बचपन से ही शिव भक्त का अनुगामी था द्य हरिकेश की घोर तपस्या से भगवान शिव प्रसन्न होकर उससे वर मांगने को कहा तब ऐसे में उसने शिव से सदा के लिए काशी में ही रहने की प्रार्थना की द्य इस कथा से एक बात उभयनिष्ठ होती हुई प्रतीत होती हैं कि काशी में लम्बे समय तक यक्ष और शिव पूजा दोनों सामानतर गति से जारी थी द्य काफ़ी कसमकश के बाद दोनों में समझौता हो गया होगा द्य मत्स्यपुराण में यहाँ तक उल्लेख है कि महायक्ष कुबेर ने अपनी लौकिक क्रियाओं को सम्पादित करते हुए वाराणसी क्षेत्र में रहते हुए गणेश पद प्राप्त कर लिए थे द्य

महाजनपद युग में शिक्षा का सबसे बड़ा केंद्र तक्षशिला हुआ करता था उसके बाद काशी का नंबर आता था द्य बनारस को शिक्षा का महत्वपूर्ण केंद्र बनाने में तक्षशिला के स्नातकों को जाता हैं द्य जातक कथाओं में यहाँ तक उल्लेख मिलता हैं कि बनारस की कुछ शिक्षण संस्थाएं तो तक्षशिला से भी पुरानी थी द्य तक्षशिला के शंख नामक ब्राह्मण ने अपने पुत्र सुसीम को शिक्षा के लिए बनारस भेजा था द्य काशीवासियों में शिक्षा के प्रति अपार प्रेम था,गरीब छात्रों के रहने और भोजन कराने की व्यवस्था यहाँ के साहूकार ख़ुशी -ख़ुशी उठा लेते थे द्य बनारस में शिक्षा के साथ -साथ संगीत के लिए अलग से एक प्रतियोगिता होती थी द्य जातक कथाओं में यहाँ तक उल्लेख हैं कि काशी में दीपमालिका कार्तिक में मनायीं जाती थी द्य जैन अनुश्रुतियों से पता चलता हैं कि महावीर स्वामी की मृत्यु उपोसय का दिन था द्य काशी नरेश ने महावीर की मृत्यु सुनकर यह संकल्प लिया कि आज काशी में खूब रोशनी की जाए क्योंकि ज्ञान का दीप तो सदैव के लिए बुझ गया था,लेकिन दीप जलाने से लोगों की स्मृति में स्वामी जीवित रहेंगे।

यह सार्वभौमिक सत्य है कि इतिहास कोई कपड़े का थान नहीं होता,जिसे फाड़ कर अलग-अलग अलग किया जा सके। लेकिन यह सार्वभौमिक सत्य काशी में आकर टूट जाता है। जहाँ दुनियाँ में सात वार और सात त्यौहार होते है लेकिन काशी में सात वार और नौ त्यौहार लोग बाग़ धूम -धाम से मनाते हैं। धरती पर काशी ही एकमात्र ऐसी नगरी है जहां के नागरिक अपने चित्त -विनोद के लिए एक गली या खुले आसमान के नीचे एकजुट होते हों। इसीलिए बनारस के नागरिकों को गंगा के खुले हुए मैदान पर हमेशा से अभिमान रहा हैं।

1194 ईस्वी में क़ुतुबद्दीन ऐबक की फ़ौजों ने काशी को तहस नहस कर डाला था। नगर की धरोहरे टूट कर मतियामेट हो चुकी थी। कुछ क्षण के लिए ऐसा प्रतीत होने लगा था कि काशी एकबार के लिए गंगा में कहीं डूब न जाए। लेकिन कुछ ही समय के बाद लोग बाग़ एकजुट होकर आपसी भाईचारे के सहारे काशी को दुबारा गंगा के किनारे खड़ा करके ही दम लिए। काशी में धर्म तीर्थ,अर्थ तीर्थ, काम तीर्थ और मोक्ष तीर्थ का एक वर्ग बनता हैं जिसमे गंगा का अविराम योगदान है। हिमालय से लेकर बंगाल की खाड़ी तक गंगा कहीं भी उत्तरायण नहीं होती केवल शिव के चरणों में नसमस्तक होनें के लिए उत्तर यू टर्न लेती है।

मुक्ति की कामना के लिए बनारस में पहले की तरह आज भी बाहर से आकर लाखों की संख्या में लोग निवास करते हैं। पहले लोग गंगा में कूद कर मर जाते थे। इसके पीछे यह मान्यता थी कि काशी में मरने पर आदमी सीधे स्वर्ग पहुंचता हैं। उन्नीसवीं सदी तक यह प्रथा जोरों -शोरों से चलती रही। लेकिन ब्रिटिश हुकूमत के आने के बाद धीरे धीरे इस प्रथा पर विराम लगना शुरू हो गया था।

बनारस पर तिरछी नज़र सभी लोगों की थी तुगलक वंश से लेकर मुगलकाल के बादशाहों ने भी बनारस को मिटाने की हरसंभव कोशिश की लेकिन कोई भी शासक वर्ग बनारस का बाल बांका भी नहीं कर सका। हालांकि बनारस को क्षतिग्रस्त करने की कोशिश में मुस्लिम शासक कुछ हद तक सफल जरूर रहें। लेकिन बनारस के वजूद को मिटा नहीं सके।बनारस भला मिटता भी कैसे जब बनारस में एक तरफ़ कबीर हो और दूसरी तरफ तुलसी हों। बनारस को नए तरीके से में पेशवाओं का भी काफ़ी सहयोग रहा इसे इतिहास कभी भूला भी नहीं सकता।

मणिकणिका घाट का उल्लेख हमें सातवीं सदी में मिलता हैं। इस घाट को लेकर लोगों के बीच यह मान्यता फैली हुई हैं कि काशी में मुर्दो को जलाने पर उसके एक कान में शिव मंत्र पढ़ते है तो दूसरे कान में काली। यह कहावत कहाँ तक सही हैं इसके बारे में कुछ भी कहना मुश्किल हैं। कोई भी सिविल सोसायटी अपने गतिशील चेतना के आधार पर ही अपनी विकास और परिवर्तन की गाथा संगीत की तरह रचती और बुनती हैं और कई मायनों में वहीं सोसायटी सबसे अधिक विकसित और ताकतवर होती हैं। लेकिन जैसे ही इस तरह की सिविल सोसायटी पर स्टेट अपना हस्तक्षेप करना चाहता है तब सोसायटी अपना मूर्त रूप खोकर बाजार में एक खिलौने की तरह प्रतीत होनें लगती हैं। पिछले एक दशक से स्टेट लगातार सिविल सोसायटी के मामलों को लेकर अपना हस्तक्षेप करने का पहल जारी किया हुआ हैं जिससे भारत की गंगा -जमुनी तहजीब अब केवल जुबानी शोभा बनकर रह गयी हैं। स्टेट के इस बढ़ते हुए कदम को देखकर एक बात याद आती है कि स्टेट की गर्दन अब ऐसी हो चुकी है कि अगर वह एक दिन भी बीना माला के खाली रहना पसंद नहीं करती। अगर कोई व्यक्ति या संस्था स्टेट के गर्दन में माला डालना अगर किसी कारण वश भूल जाए तो स्टेट खुद अपने हाथों से अपनी गर्दन में माला डाल देता है। सिविल सोसायटी परिवर्तन की विरोधी नहीं होती लेकिन वह परिवर्तन बसंत की तरह होनी चाहिए।

चन्द्रयान दो की विफलता पर सही परिप्रेक्ष्य दर्शाती सीरिज

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे

लेखक वेबसाइट ई- अंतर्भव के प्रबंध संचालक हैं।

किसी सत्य घटना के सार तत्व को केन्द्र में रखकर किसी फिल्म अथवा वेबसिरीज़ की बुनावट रोचक प्रस्तुति हो सकती है मगर ऐसा कोई भी रचनाकर्म आसान नहीं होता है क्योंकि इसमें तथ्यों के साथ गैरज़रुरी छेड़छाड़ की आशंका रहती है। भारत की अंतरिक्ष विज्ञान में प्रभावी दखल की एक ऐसी ही बड़ी घटना थी 'मिशन चन्द्रयान दो'। लगभग हर भारतीय को

आज़ भी वह रात याद है जब चंद्रयान-दो का लैंडर आखिरी पल में सम्पर्क खो बैठा था। कुछ सेकण्ड में पूरी उम्मीद टूट गई थी और माहौल एकदम निःशब्द हो गया था। वेब सिरीज - 'स्पेस जेन-चंद्रयान' भी उन्हीं लम्हों को एक पटकथा में पिरोकर शुरु होती है।

पाँच एपिसोड की इस सिरीज में यह दिखाने की कोशिश की गई है कि हमारे वैज्ञानिकों ने उस एक विफलता के बाद खुद को कैसे संभाला और चंद्रयान-तीन की तैयारी में वे कैसे जुट गये? शुरुआत काफी भावुक और अच्छी लगती है, लेकिन सीरीजों जैसे-जैसे आगे बढ़ती है उसका समग्र प्रभाव थोड़ा कमजोर सा होने लगता है।

सिरीज की कहानी चन्द्रयान-दो की असफलता, इसरो प्रमुख शंकरन नायर (यह भूमिका उदय महेश ने निभाई है) और वैज्ञानिक सलाहकार राकेश मोहंती (गोपाल दत्त) के डर और घबराहट के आसपास घूमती है। इसके बाद प्रोजेक्ट डायरेक्टर यामिनी मुदलियार (श्रिया सरन) व नेविगेशन एक्सपर्ट अर्जुन वर्मा (नकुल मेहता) पर आई जिम्मेदारी की बात चलती है ।

कथाक्रम आगे तब बढ़ता है जब कथासूत्र जाँच अधिकारी सुदर्शन रमैया (प्रकाश बेलवाड़ी) के हाथ लगता है । सुदर्शन बाकी लोगों की तरह गुस्से में नहीं पड़ते हैं बल्कि शान्ति से गलती समझने की कोशिश करते हैं। बाद में जब शंकरन रिटायर होते हैं और रमैय्या मजबूरी में ही सही, पूरे स्पेस सेंटर के प्रमुख बन जाते हैं। आगे कहानी चंद्रयान-तीन की तैयारी की ओर मुड़ जाती है। इस बीच कहानी में कई मोड़ आते हैं। कोविड-19 के दरमियान काम का बार-बार रुकना और रूस का लूना-पच्चीस लॉन्च करने का अचानक ऐलान होना, सब मिलकर मिशन पर दबाव बढ़ा देते हैं। वैसे कहानी का सकारात्मक पक्ष यह है कि कहानी यह बताती है कि पहली नाकामी ने टीम को गिराया नहीं, बल्कि थोड़ा और मजबूत ही किया है।

सिरीज़ में दो ट्रैक साथ-साथ चलते हैं। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के वैज्ञानिकों की मेहनत वाला ट्रैक अच्छा लगता है, वहीं अर्जुन वर्मा की निजी फैमिली स्टोरी उतनी जमती नहीं और थोड़ी अलग-थलग सी लगती है। रमैय्या का बैकग्राउण्ड और उनके साथ हुई सामाजिक परेशानियां काफी अच्छे से दिखाई गई हैं और कहानी में गहराई भी लाती हैं।हालांकि, सच्चाई यह है कि कि चंद्रयान-क्षंदं की असली चुनौतियों को और ज्यादा समय मिलता, तो कहानी ज्यादा असरदार होती। दानिश सैत थोड़ी राहत देते हैं, लेकिन उनका चरित्र छोटा है। गोपाल दत्त का चरित्र ज़रूरत से ज्यादा चिड़चिड़ा और सख्त दिखाया गया है, जो कहानी से थोड़ा बाहर सा लगता है। प्रकाश बेलवाड़ी अच्छे लगे, लेकिन उनका चरित्र भी उतना खुलकर नहीं लिखा गया जितना लिखा जा सकता था।

अगर आपको अंतरिक्ष मिशन और इसरो की मेहनत में दिलचस्पी है, तो यह सिरीज एक बार देखी जा सकती है। कुछ हिस्से अच्छे लगेंगे और थोड़ी प्रेरणा भी मिलती है। लेकिन अगर आप बहुत ज्यादा रोमांच, गहराई या लगातार दिलचस्प चलने वाली कहानी की उम्मीद कर रहे हैं, तो यह सिरीज आपको थोड़ी कमजोर लगेगी। कई जगह कहानी धीमी पड़ जाती है। कई सीन्स ओवर ड्रामेटिक महसूस होता है। कुल मिलाकर, ये सीरीज बहुत उम्मीदें लगाकर देखेंगे तो थोड़ी निराशा हो सकती है।

संत रविदास : भक्ति कर्मयोग और राष्ट्रीय एकता के अग्रदूत

जयंती पर विशेष
लाल सिंह आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष अनुसूचित जाति मोर्चा, भाजपा

भारतीय संत परंपरा में संत शिरोमणि गुरु रविदास जी का नाम केवल आध्यात्मिक साधना तक सीमित नहीं है; वे सामाजिक चेतना, समानता और मानव गरिमा के विराट प्रतीक हैं। उनकी वाणी का मूल संदेश यही था कि ईश्वर बाहरी आडंबरों में नहीं, बल्कि निर्मल मन में निवास करते हैं– 'मन ही पूजा, मन ही धूप' के माध्यम से उन्होंने भक्ति को आंतरिक साधना से जोड़ा। संत रविदास जी एक ऐसे सांस्कृतिक संकल्प का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसने समाज को झुकना नहीं, बल्कि मानवता के सूत्र में जोड़ना सिखाया। जात-पात और छुआछूत से जकड़े समाज में उन्होंने प्रेम, समरसता और आध्यात्मिक समानता का दीप जलाया।

15वीं शताब्दी में जन्मे संत रविदास जी ने उस दौर में आवाज उठाई जब सामाजिक विभाजन गहराई तक बैठ चुका था। उन्होंने अपने पदों और जीवन के उदाहरणों से स्पष्ट किया कि मनुष्य की पहचान जन्म से नहीं, बल्कि कर्म और गुणों से होती है। 'एकै माटी के सभ भांडे' के माध्यम से उन्होंने समस्त मानवता की एकता का दर्शन दिया, वहीं 'जनम जात मत पूछिए, का जात अरू पात। रैदास पूत सब प्रभु के, कोए नहिं जात कुजात॥ ' कहकर जातिगत अहंकार को सामाजिक विघटन का कारण बताया। उनके लिए भक्ति केवल पूजा-पाठ नहीं थी, बल्कि सेवा, शिक्षा और समाज सुधार भी उतने ही पवित्र कर्म थे। ज्ञान को उन्होंने वह शक्ति माना जो व्यक्ति को सही और गलत का विवेक देती है और परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त करती है।

संत रविदास जी के 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' का संदेश यह बताता है कि पवित्रता स्थान में नहीं, मन में होती है। युवाओं के लिए उनका यह जीवनदर्शन आज भी प्रेरणास्रोत है–कर्म करते रहो, फल अवश्य मिलेगा। उनकी कल्पना का आदर्श समाज– 'बेगमपुरा '–दुःख, भेदभाव और अभाव से मुक्त एक समतामूलक व्यवस्था का स्वप्न था। यह केवल आध्यात्मिक कल्पना नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय की परिकल्पना थी, जहाँ सबको अन्न, सम्मान और समान अवसर मिले। आधुनिक समय में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का समावेशी विकास और सबका साथ - सबका विकास की अवधारणा को इसी दृष्टि से जोड़ा गया है,

जहाँ समाज के अंतिम व्यक्ति तक सुविधाएँ और अवसर पहुँचाने की बात होती है।

'ऐसा चाहूँ राज मैं, जहाँ मिलै सबन को अन्न, छोट-बड़ो सब सम बसै, रैदास रहै प्रसन्न' उनके सामाजिक दर्शन को और स्पष्ट करता है। वे केवल आध्यात्मिक मुक्ति की बात नहीं करते, बल्कि धरती पर ही एक न्यायपूर्ण व्यवस्था का स्वप्न देखते हैं। उनके लिए आदर्श 'राज' वह है जहाँ किसी को भूख, अभाव या अपमान का सामना न करना पड़े। यहाँ अन्न जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं का प्रतीक है, जबकि 'छोट-बड़ो सब सम' सामाजिक समानता और जातिगत भेदभाव के अंत का संदेश देता है। यह विचार उस समय के कठोर सामाजिक ढाँचे के विरुद्ध एक शांत लेकिन गहरी क्रांति थी। 'रैदास रहै प्रसन्न' पंक्ति दर्शाती है कि संत की खुशी व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामूहिक कल्याण से जुड़ी है। इस प्रकार, यह पद संत रविदास जी के समता, करुणा और मानवीय गरिमा पर आधारित समाज के आदर्श को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करता है।

भगवान और भक्त के संबंध को अत्यंत सुंदर प्रतीक के माध्यम से कहा है, 'प्रभु जी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।' दीपक (दीया) ईश्वर का प्रतीक है और बाती (बाती/वाती) भक्त का। दीपक बिना बाती के नहीं जलता, और बाती बिना दीपक के अर्थहीन है – अर्थात् भक्त और प्रभु का संबंध अभिन्न है। संत रविदास जी कहते हैं की हैं कि उनका अस्तित्व प्रभु से ही प्रकाश पाता है। जिस प्रकार बाती स्वयं जलकर प्रकाश फैलाती है, उसी तरह सच्चा भक्त अहंकार त्यागकर ईश्वर में लीन हो जाता है और उसके जीवन से प्रेम, दया और ज्ञान का प्रकाश फैलता है। 'दिन राती' शब्द निरंतर भक्ति और अटूट स्मरण का संकेत देते हैं – भक्ति कोई क्षणिक भावना नहीं, बल्कि जीवन का सतत प्रवाह है।

संत रविदास जी आध्यात्मिक दृढ़ता और सांस्कृतिक आत्मसम्मान के भी प्रतीक रहे। कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने सत्य और अपने धर्ममार्ग से समझौता नहीं किया। मीराबाई जैसी भक्त का उन्हें गुरु मानना यह दर्शाता है कि भक्ति और ज्ञान किसी वर्ग या जन्म की सीमा में बँधे नहीं हैं । उनका जीवन हमें सिखाता है कि सच्ची भक्ति, सच्चा धर्म और सच्ची राष्ट्रसेवा कर्म, सेवा, समानता और मानव प्रेम में प्रकट होती है। संत रविदास जयंती केवल प्रेरणा का अवसर नहीं, बल्कि एक संकल्प है–एक ऐसे समरस, शिक्षित और आत्मनिर्भर समाज के निर्माण का, जहाँ हर मन पवित्र हो और हर व्यक्ति सम्मानपूर्वक जीवन जी सके।

चित्रकूट धाम को देंगे भव्य और दिव्य रूप, राज्य सरकार का संकल्प

गुढ़ में 100 एकड़ में बनेगा नया औद्योगिक क्षेत्र : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के मार्गदर्शन में राज्य सरकार विरासत का संरक्षण करते हुए धार्मिक पर्यटन में नए आयाम स्थापित कर रही है। उज्जैन में बाबा महाकाल के महालोक, मंदसौर में भगवान श्रीपशुपतिनाथ लोक, ओरछा में राजा श्रीराम लोक और चित्रकूट धाम सहित 13 भव्य लोक आकार ले रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विंध्य क्षेत्र के रीवांचल की पवित्रता ऐसी है कि भगवान श्रीराम ने अयोध्या छोड़ने के बाद अपने जीवन के महत्वपूर्ण 11 वर्ष से अधिक का समय चित्रकूट में बिताया। चित्रकूट धाम को भव्य और दिव्य रूप प्रदान करना मध्यप्रदेश सरकार का संकल्प है। यहां तीन हजार करोड़ की लागत के विकास कार्य होंगे और आगे भी समुचित राशि दी जाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने युवाओं के रोजगार के लिए गुढ़ क्षेत्र में 100 एकड़ का नया औद्योगिक क्षेत्र बनाने की महत्वपूर्ण घोषणा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को रीवा जिले के गुढ़ विधानसभा क्षेत्र के बाबा भैरवनाथ मंदिर परिसर में आयोजित लोकार्पण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

प्रधानमंत्री के कार्यकाल में बढ़ रही मंदिरों की भव्यता

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बाहरी आक्रांताओं ने 1000 साल पहले गुजरात के प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर को ध्वस्त किया था। आजादी के बाद तत्कालीन केन्द्रीय गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने इसका जीर्णोद्धार कराया और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में सोमनाथ मंदिर की प्रतिष्ठा और भव्यता में वृद्धि हो रही है। अयोध्या में भगवान श्रीराम की जन्मस्थली पर ऐतिहासिक मंदिर का निर्माण हो चुका है।

गुढ़ क्षेत्रवासियों को मिलीं सौगातें- मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बाबा भैरवनाथ मंदिर के नए भवन सहित 17 करोड़ 13 लाख लागत के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण किया। उन्होंने कहा कि भगवान भैरवनाथ मंदिर प्रांगण में विकास कार्यों के लिए 2 करोड़ रुपए की अतिरिक्त राशि दी जाएगी। मंदिर प्रांगण में पुलिस चौकी और भैरवनाथ सरोवर का निर्माण भी किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुढ़ में तीर्थयात्रियों के लिए विश्राम गृह और नई गौशाला बनाए जाने की भी घोषणा की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने स्व-सहायता समूह की महिलाओं को 2 करोड़ रूपये के हितलाभ वितरित किये। डॉ. भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजनांतर्गत डेयरी शुरू करने के लिए आवश्यक राशि के चेक हितग्राही को सौंपे गये और मेधावी विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश सरकार ने माता-बहनों के कल्याण के लिए अनेक निर्णय लिए हैं। मुख्यमंत्री लाड़ली बहन योजना की राशि बढ़ाकर 1500 रुपए की गई है। बहनों के हाथ में जब धन आता है तो वह मायके और ससुराल दोनों की चिंता करती हैं। वर्तमान में राज्य और केंद्र सरकार के माध्यम से किसानों को प्रोत्साहन राशि के रूप में 12 हजार रुपए सालभर में मिल रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने पौधे रोपित कर दिया पर्यावरण-संरक्षण का संदेश

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुढ़ विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत गुढ़ के समीप ग्राम खामडीह में मध्यप्रदेश शासन की एलएडी योजनांतर्गत भैरव बाबा मंदिर के जीर्णोद्धार एवं सामुदायिक भवन निर्माण कार्य पूर्ण होने पर भैरवनाथ लोक परिसर का भव्य लोकार्पण किया गया। इसकी कुल लागत 2 करोड़ 19 लाख है। मुख्यमंत्री ने वैदिक मंत्रोच्चार के साथ भैरव बाबा का विधिवत पूजन-अर्चन एवं हवन किया और प्रदेश की सुख-समृद्धि, शांति एवं जनकल्याण की कामना की। मुख्यमंत्री ने मंदिर परिसर में ध्वज का आरोहण कर धार्मिक आस्था को नई ऊँचाई दी। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंदिर परिसर में त्रिवेणी बरगद, पीपल एवं नीम के पौधे रोपे और धार्मिक आस्था के साथ पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। मंदिर परिसर पहुंचने पर मुख्यमंत्री का लक्ष्मी स्वरूपा नारियों ने मंगल कलश और पुष्पवर्षा से स्वागत किया। इस अवसर पर 51 बटुकों ने वैदिक मंत्रोच्चार कर वातावरण को गरिमा और धर्ममय बनाया।

अभाविप मध्यभारत प्रांत कार्यकारिणी बैठक का बरेली में शुभारंभ

बरेली (रायसेन)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, मध्यभारत प्रांत की प्रांत कार्यकारिणी बैठक का बरेली (रायसेन जिला) में शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में प्रांत अध्यक्ष धर्मेंद्र राजपूत, प्रांत मंत्री श्री केतन चतुर्वेदी एवं प्रांत संगठन मंत्री श्री रोहित दुबे जी उपस्थित रहे। बैठक में मध्यभारत प्रांत के विभिन्न 22 जिलों से आए दायित्ववान कार्यकर्ता सहभागिता कर रहे हैं।

बैठक में प्रमुख रूप से वर्तमान शैक्षणिक परिदृश्य, सदस्यता 2026, कार्यक्रमात्मक समीक्षा, मिशन साहसी, सामाजिक अनुभूति 2026, आयाम एवं कार्य विभाग, परिसर चलो अभियान, ग्रीष्मकालीन विस्तारक योजना, प्रांत छात्रा संसद, वैचारिक एवं शिक्षा समूह रचना, जिला संयोजक वर्ग, चरैवेति अभियान -0.4, स्क्रीन टाइम टू एक्टिविटी टाइम अभियान, छात्रावास सर्वेक्षण अभियान, विश्वविद्यालय प्रवास, आंदोलन-छात्रसंघ, संगठनात्मक विचार बैठक (चर्चा एवं संवाद) एवं नगर खेल कुंभ जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की जाएगी।

बैठक में आगामी कार्यक्रम महारानी अबक्का चोटा 500 वर्ष, भूपेन हजारीका जन्मशती वर्ष,श्री गुरु तेग बहादुर के 350 वर्ष,अटल बिहारी जन्मशती वर्ष,श्री यशवंतराव केलकर जन्म शताब्दी वर्ष,एकात्म मानव दर्शन के 60 वर्ष, वंदे मातरम के 150 वर्ष के उपलक्ष में सामूहिक वंदे मातरम गान ,28 फरवरी राष्ट्रीय विज्ञान दिवस,भारतीय गणतंत्र के 75 वर्ष, 8 मार्च विश्व महिला दिवस,संघ शताब्दी वर्ष, 23 मार्च बलिदान दिवस, आपातकाल के विरुद्ध आंसामूहिक वंदे मातरम गानादोलन, 14 अप्रैल डॉ बाबासाहेब आंबेडकर जन्मजयंती,हल्दीघाटी के 450 वर्ष, 11 मई राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस, सरदार पटेल सार्थशती वर्ष तथा राष्ट्रीय कार्यक्रमों की भी चर्चा हुई। इस अवसर पर अभाविप मध्यभारत प्रांत मंत्री केतन चतुर्वेदी ने कहा कि पिछली कार्यकारिणी बैठक में जो लक्ष्य मध्य भारत प्रांत ने लिए थे वह सब पूर्ण हुए हैं। हम इस बैठक में विभिन्न विषयों पर चर्चा करते हुए जो आगामी लक्ष्य लेंगे उनको शत प्रतिशत पूर्ण कर दिखाएंगे। बैठक के दौरान संगठन को आगामी समय में और अधिक प्रभावी बनाने, छात्र समस्याओं के समाधान हेतु ठोस कार्ययोजना तैयार करने तथा राष्ट्र निर्माण में छात्र शक्ति की भूमिका को सशक्त करने पर विशेष जोर दिया गया।

आमला से रमली मार्ग अंतर्गत बेल नदी पर पुल का भूमिपूजन

बैतूल। आमला से रमली मार्ग पर बेल नदी पर प्रस्तावित पुल निर्माण कार्य का भूमिपूजन कार्यक्रम 31 जनवरी को गरिमामय रूप से संपन्न हुआ। कार्यक्रम में केंद्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उइके, विधायक बैतूल हेमंत खण्डेलवाल, विधायक आमला डॉ योगेश पाण्डग्रे, जिला पंचायत अध्यक्ष राजा पवार सहित अनेक जनप्रतिनिधि एवं अधिकारी उपस्थित रहे। निर्मित किए जाने वाले इस पुल की लंबाई 50.00 मीटर होगी, जिसके लिए 259.07 लाख रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है। इस पुल के निर्माण से आमला शहर से रमली, नांदपुर सहित आसपास के 10-15 गाँवों की लगभग 5 से 10 लाख आबादी को आवागमन में सुविधा मिलेगी। पुल बनने से क्षेत्रीय कनेक्टिविटी सुदृढ़ होगी तथा स्थानीय नागरिकों को शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार और रोजगार के अवसरों तक पहुँच आसान होगी। इस अवसर पर भाजपा जिला महामंत्री प्रदीप ठाकुर, भाजपा जिला उपाध्यक्ष नरेन्द्र गढेकर, जिला जनपद सदस्य देवकीबाई

यादव, भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष रामकिशोर देशमुख सहित अन्य स्थानीय जनप्रतिनिधि उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में वार्ड क्रमांक 5 के पार्षद राकेश शर्मा ने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

स्वतंत्रता संग्राम सेनानी प्रतापभानु सिंह चौहान स्मृति अखिल भारतीय हॉकी प्रतियोगिता के 61 वर्ष के प्रथम मेच में बैतूल की शानदार जीत

सुबह सवेरे सोहागपुर। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी प्रताप भानु सिंह स्मृति चौहान अखिल भारतीय हॉकी प्रतियोगिता के 61 में साल के प्रथम मैच में बैतूल की शानदार जीत हुई। संग्राम सेनानी स्वर्गीय ठाकुर प्रताप भानु सिंह चौहान की स्मृति में आयोजित प्रतिष्ठित अखिल भारतीय हॉकी टूर्नामेंट का भव्य शुभारंभ जवाहरलाल नेहरू स्मृति महाविद्यालय के खेल मैदान में पूर्व वेयरहाउसिंग कॉरपोरेशन निगम अध्यक्ष राजेन्द्र सिंह ठाकुर, पूर्व विधायक सविता दीवान शर्मा, नगर पालिका अध्यक्ष लता यशवंत पटेल, उपाध्यक्ष आकाश रघुवंशी, महाविद्यालय संचालन समिति के अध्यक्ष श्री कैलाश पालीवाल, कन्नू लाल अग्रवा, हमीर सिंह चंदेल,पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष अभिलाष सिंह चंदेल, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष संतोष मालवीय आयोजन समित से अध्यक्ष जयराम रघुवंशी भानूप्रकाश तिवारी शेर खान, जयप्रकाश माहेश्वरी,संजय खंडेलवाल सचिव पवन सिंह जी चौहान संयोजक शंकरलाल मालवीय, अभिषेक चौहान सौरभ तिवारी

अभिनव पालीवाल दादूराम कुशवाहा अंकुश जायसवाल आदि के आतिथ्य में संपन्न हुआ। 61 वें साल का उद्घाटन मैच पहले दिन का पहला मुकाबला बैतूल एवं बरेली टीमों के मध्य खेला गया। रोमांचक मुकाबले में बैतूल की टीम ने शानदार खेल का प्रदर्शन करते हुए बरेली को 7-2 से पराजित किया। बैतूल के खिलाड़ियों ने तेज आक्रमण, सटीक फील्ड गोल और बेहतरीन टीमवर्क का परिचय दिया, वहीं बरेली की टीम ने भी संघर्ष करते हुए दो गोल दागे। निर्णायक अश्वनी सरोज एवं अख्तर खान रथे। दूसरा मुकाबला में सोहागपुर एवं ऑर्डनेंस फैक्ट्री इटारसी के बीच खेला गया। जिसमें खबर लिखे जाने तक इस मुकाबले में सोहागपुर की टीम 1-0 से बढ़त बनाए हुए थी। दोनों टीमों के खिलाड़ियों ने तेज़ गति, अनुशासित खेल और शानदार पासिंग से दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया।

विख्यात टीम दिखाएगी करतब- टूर्नामेंट समिति के सचिव पवन सिंह चौहान एवं मीडिया प्रभारी शेख आरिफ ने बताया कि इस वर्ष प्रतियोगिता में केरल, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्, छत्तीसगढ़, पंजाब, हरियाणा सहित मध्यप्रदेश के सागर, इंदौर, सिवनीछपारा, जबलपुर, भोपाल, बैतूल, हरदा, नर्मदापुरम, इटारसी और सोहागपुर की प्रतिष्ठित टीमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करेंगी

संयुक्त राष्ट्र सामाजिक विकास आयोग के 64वें सत्र में अमेरिका में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर

संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय, न्यूयॉर्क में विभिन्न सत्रों एवं संवादों में करेंगी सहभागिता

धार। केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री तथा धार-महू से सांसद सावित्री ठाकुर 31 जनवरी से 6 फरवरी 2026 तक संयुक्त राज्य अमेरिका के न्यूयॉर्क में आयोजित होने वाले संयुक्त राष्ट्र सामाजिक विकास आयोग के 64वें सत्र में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगी। इस अवसर पर वे भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करते हुए संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय, न्यूयॉर्क में विभिन्न सत्रों एवं संवादों में सहभागिता करेंगी।

संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक परिषद के अंतर्गत कार्यरत सामाजिक विकास आयोग, संयुक्त राष्ट का एक प्रमुख कार्यात्मक आयोग है, जो सामाजिक विकास से जुड़े महत्वपूर्ण वैश्विक मुद्दों पर नीति निर्माण, अंतरराष्ट्रीय सहयोग एवं समन्वय को बढ़ावा देता है। आयोग का मुख्य फोकस सामाजिक समावेशन, समानता, गरीबी उन्मूलन, सामाजिक न्याय, महिला एवं बाल कल्याण तथा समाज के वंचित वर्गों के सशक्तिकरण से संबंधित नीतियों पर केंद्रित रहता है।

सामाजिक विकास आयोग का वार्षिक सत्र सदस्य देशों के लिए एक महत्वपूर्ण वैश्विक मंच प्रदान करता है, जहां वे अपने-अपने देशों में सामाजिक विकास के क्षेत्र में हुई प्रगति की समीक्षा करते हैं, अनुभव साझा करते हैं तथा सर्वोत्तम प्रथाओं का आदान-प्रदान करते हैं। 64वें सत्र में भारत की सक्रिय भागीदारी सामाजिक विकास के क्षेत्र में बहुपक्षीय प्रयासों के प्रति उसकी निरंतर प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है।

भारत के अनुभवों एवं दृष्टिकोण को विश्व समुदाय के समक्ष रखेगी- इस सत्र के दौरान केंद्रीय राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर भारत में महिला एवं बाल विकास, सामाजिक सुरक्षा, समावेशी विकास तथा जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से किए जा रहे प्रयासों को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रस्तुत करेंगी। साथ ही वे वैश्विक सामाजिक नीति प्राथमिकताओं पर रचनात्मक संवाद में भाग लेंगी और भारत के अनुभवों एवं दृष्टिकोण को विश्व समुदाय के समक्ष रखेंगी।

अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय बैठकों की भी संभावना

न्यूयॉर्क प्रवास के दौरान सावित्री ठाकुर की संयुक्त राष्ट्र की विभिन्न एजेंसियों, अन्य सदस्य देशों के प्रतिनिधियों तथा अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय बैठकों की भी संभावना है। इन संवादों के माध्यम से सामाजिक विकास, महिला सशक्तिकरण एवं बाल कल्याण से जुड़े विषयों पर सहयोग की नई संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया जाएगा। केंद्रीय राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर की यह पांच दिवसीय यात्रा भारत की वैश्विक मंच पर बढ़ती भूमिका, सामाजिक विकास के प्रति उसकी प्रतिबद्धता तथा 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना के अनुरूप विश्व कल्याण में उसके योगदान को सशक्त रूप से प्रतिबिंबित करती है।

ग्वालियर-दतिया और रीवा में घना कोहरा, विजिबिलिटी 50 मीटर

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में कोहरा, बारिश और सर्दी का दौर जारी है। शनिवार सुबह ग्वालियर, रीवा और दतिया में घना कोहरा रहा। रीवा में विजिबिलिटी सबसे कम रही। सतना, भोपाल, उज्जैन, श्योपुर, शाजापुर, सीहोर, रायसेन, विदिशा, देवास, रतलाम, राजगढ़, नर्मदापुरम, धार, गुना, दमोह, जबलपुर, खजुराहो, मंडला, नरसिंहपुर, बालाघाट समेत 20 से ज्यादा जिलों में मध्यम कोहरा देखा गया। इधर रात के तापमान में बढ़ोतरी हुई है। वहीं दिन में सर्दी का असर बढ़ा है। बड़े शहरों में तापमान 10 डिग्री से ज्यादा रहा। छतरपुर का खजुराहो सबसे ठंडा रहा। यहां न्यूनतम तापमान 6 डिग्री दर्ज किया गया। पचमढ़ी-दतिया में 7.8 डिग्री, उमरिया में 7.9 डिग्री, रायसेन में 8.2 डिग्री, सतना में 8.6 डिग्री, मंडला में 8.9 डिग्री, शिवपुरी में 9 डिग्री, दमोह में 9.5 डिग्री, नौगांव में 9.6 डिग्री, मलाजखंड में 9.7 डिग्री और सीधी में तापमान 9.8 डिग्री सेल्सियस रहा।

मौसम विभाग ने अगले कुछ घंटों के दौरान गुना, शाजापुर समेत 8 जिलों में आंधी, बारिश और गरज चमक होने का अलर्ट जारी किया है। शाजापुर में तो हल्की बारिश का दौर शुरू भी हो गया है। इंदौर में भी बूंदाबांदी हुई।

मौसम विभाग के अनुसार, नर्मदापुरम, पचमढ़ी, विदिशा, राजगढ़, शाजापुर में बिजली चमकने के साथ तेज हवा चलने और दोपहर में गुना, राजगढ़, सागर, रायसेन के सांची में हल्की बारिश होने की संभावना है।

अगले 3 दिन ऐसा रहेगा मौसम

1 फरवरी- ग्वालियर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, दतिया, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर, निवाड़ी, टीकमगढ़ और छतरपुर में गरज-चमक और बारिश का अलर्ट है।

एआर रहमान

क्या वास्तव में 8 साल से काम नहीं मिला

एआर रहमान ने हाल ही में एक इंटरव्यू में कहा कि सत्ता परिवर्तन के बाद पिछले 8 साल में बॉलीवुड में गैर-क्रिएटिव लोग फैसले ले रहे हैं। उनका यह बयान 'सांप्रदायिक मुद्दा' भी हो सकता है। उन्होंने बताया कि उन्हें कुछ प्रोजेक्ट्स से हटा दिया गया। हालांकि, सीधे उनके खिलाफ कुछ नहीं कहा गया। यह बयान जनवरी 2026 में वायरल हुआ, जिसमें उन्होंने 'छावा' फिल्म को भी विभाजनकारी बताया।

एआर रहमान वो संगीतकार हैं, जिनके संगीत में इबादत की सुगंध है, तो लफ्जों में बगावत की चिंगारी भी बरक़रार है। 'रोजा' से ऑस्कर के मंच तक पहुंचे इस संगीतकार को 'ताल' ने हिंदी सिनेमा का 'रॉकस्टार' बना दिया। लेकिन, दिल की धुनों को सजाकर रूह को सुकून देने वाले एआर रहमान को अपने 34 साल लंबे करियर में वो इज्जत कभी नहीं मिली, जो अब मिल रही है। लेकिन, आमतौर पर चुप रहने वाले रहमान ने इस बार कुछ ऐसा बोल दिया कि विवादों का तूफान खड़ा हो गया। हर तरफ यही सवाल गूंज रहा है। कम बोलने वाले रहमान को आखिर ऐसी क्या आन पड़ी कि उन्होंने इतने तीखे बयान दिए।

एआर रहमान उन संगीतकारों की फेहरिस्त में शुमार हैं, जो जुबान से कम और काम से ज्यादा बोलते हैं। यूं कहें कि उनका संगीत ही उनकी सबसे ताकतवर आवाज है। पब्लिक प्लेटफॉर्म पर रहमान को देखा जाए, तो वे ज्यादातर खामोश ही नजर आते हैं। लेकिन, हाल ही में एक इंटरव्यू में उन्होंने खुलकर बोला। रहमान के तीखे बयान, 'छावा' और सांप्रदायिक भेदभाव का आरोप, ये सब इंटरव्यू में रहमान ने कहा। 'छावा' फिल्म को 'बांटने वाली' करार दिया। हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में कथित सांप्रदायिक भेदभाव पर बोला, तो बवाल मच गया।

इंटरव्यू में उन्होंने कहा कि 'छावा' ऐसी फिल्म थी, जो समाज को बांटती है। फिर भी निर्देशक के कहने पर उन्होंने इसका संगीत दिया। लेकिन, असली धमाका तब हुआ, जब उन्होंने खुलासा किया कि पिछले 8 साल से उन्हें सिनेमा में अच्छा काम नहीं मिल रहा। रहमान ने कहा कि पिछले 8 सालों में शायद सत्ता का बदलाव आया है। अब फैसले लेने वाले लोग क्रिएटिव बिल्कुल नहीं हैं। मुझे काम नहीं मिला, तो हो सकता है इसके पीछे सांप्रदायिक भेदभाव हो। हालांकि, किसी ने मेरे सामने ऐसा नहीं कहा।

दक्षिणपंथी नेताओं और सोशल मीडिया पर तीखी प्रतिक्रिया आई। पश्चिम बंगाल के पूर्व बीजेपी सांसद अर्जुन सिंह ने रहमान से अपील की कि वे इस्लाम छोड़कर 'सनातन धर्म' में लौट आएं, क्योंकि भारत हिंदू राष्ट्र बनेगा। अनूप जलोटा ने भी यही सलाह दी। अभिजीत भट्टाचार्य जैसे गायकों ने रहमान पर हमला बोला। वहीदा रहमान ने शांति की अपील की, बोलीं 'यह हमारा मुल्क है, शांति से रहो।' इम्तियाज अली ने इंडस्ट्री में भेदभाव की पोल खोली। रहमान ने बाद में वीडियो जारी कर सफाई दी कि

उनका इरादा किसी को दुख पहुंचाना नहीं था। सोशल मीडिया पर मुस्लिम कलाकारों की असुरक्षा पर बहस छिड़ गई।

कुछ अफवाहें सुनाई दीं, जैसे आपको बुक किया था, लेकिन दूसरी म्यूजिक कंपनी ने पैसा लगाया और अपने म्यूजिशियन्स को ले लिया। मैं कहता हूं, ठीक है, मैं आराम कर लेता हूं। ये बयान सोशल मीडिया पर वायरल हो गए। एक तरफ फैंस उनका समर्थन कर रहे थे, तो दूसरी तरफ ट्रोल्स ने उन्हें निशाना बनाना शुरू कर दिया। सवाल यह उठा कि क्या वाकई रहमान साजिशों का शिकार हुए या ये सिर्फ निराशा का इजहार था! रहमान का दावा है कि उन्हें 8 साल से अच्छा काम नहीं मिला, लेकिन आंकड़े कुछ और ही बयान देते हैं। 2018 से 2025 तक उन्होंने करीब 35 से ज्यादा बड़े-छोटे प्रोजेक्ट्स में हाथ आजमाया। इनमें बॉलीवुड की महंगी फिल्में, साउथ की ब्लॉकबस्टर, वेब सीरीज और इंटरनेशनल प्रोजेक्ट्स शामिल हैं।

रहमान ने बीते सालों में इतना काम किया कि ये नहीं कहा जा सकता कि रहमान निष्क्रिय थे। कई फिल्में 100-500 करोड़ बजट वाली रहीं। 'पोन्नियिन सेल्वन' सीरीज ने तो साउथ में तहलका मचा दिया। सवाल वही है कि अच्छे काम का पैमाना क्या है! रहमान के संगीत की एक अलग फैन आर्मी है। जैज, हिप-हॉप और वेस्टर्न बीट्स के दौर में भी उनके गानों की क्लासिक छाप बरकरार है। इंडस्ट्री इंसाइडर्स के मुताबिक, वे एक बड़ी फिल्म के लिए 7-9 करोड़ चार्ज करते हैं। कभी 25 हजार से शुरुआत करने वाले रहमान आज टॉप श्रेणी में हैं। सेलिब्रिटी नेटवर्थ, जीक्यू इंडिया और लाइफस्टाइल एशिया की रिपोर्ट्स कहती हैं कि उनकी कुल संपत्ति 1700-2100 करोड़ रुपए है। '2.0' जैसी फिल्मों ने उन्हें करोड़ों कमाए। फीस के अलावा कॉन्सर्ट्स, ब्रांड्स और ओटीटी डील्स से कमाई दोगुनी।

यह विवाद बॉलीवुड की सांप्रदायिक ध्रुवीकरण को उजागर करता है, जहां 'कश्मीर फाइल्स' जैसी फिल्में मुस्लिम-विरोधी भावनाएं भड़काती हैं। रहमान जैसे मुस्लिम कलाकार 'अच्छे मुस्लिम' से 'बुरे' बन जाते हैं। साउथ सिनेमा की सफलता के बीच बॉलीवुड की जड़ें कमजोर पड़ रही हैं। राजनीतिक बयान विवाद को धार्मिक रंग दे रहे हैं, जो रचनात्मक स्वतंत्रता पर सवाल उठाते हैं। रहमान का बयान उद्योग में बदलते पावर डायनामिक्स का आईना है, लेकिन इससे उनकी छवि पर असर पड़ा। कुल मिलाकर, यह भारतीय सिनेमा की सांस्कृतिक युद्ध की झलक है।

रियल बॉक्स

बड़ा क्यों नहीं हो रहा, बच्चों का सिनेमा

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

आजादी के बाद हिंदी सिनेमा ने हर दशक में समाज को आईना दिखाने की कोशिश की। बच्चों के मुद्दों, उनकी सामाजिक चुनौतियों और अंतर्मन की गहराइयों को पर्दे पर उतारने का प्रयास भी हुआ, लेकिन यह कोशिश अभी भी अपरिपक्व है। अधिकांश बाल फिल्में उपदेशों का पुलिंदा बनकर रह गईं। हिंदी सिनेमा की परंपरा रही है संदेश बाजी की यानी ज्ञान बांटना, नैतिकता सिखाना। बालमन को कुरेदना, उनकी जटिल भावनाओं को उकेरना, यह दुर्लभ रहा है। क्योंकि, फिल्में बड़े दर्शकों के लिए बनती रहीं, बच्चों के लिए नहीं। सत्यजित राय ने बंगाली सिनेमा में बच्चों की दुनिया को संवेदनशीलता से छुआ। उनकी 'गोपी गाये बाघ आया' (1956) जैसी फिल्में बच्चों के डर, कल्पना और नैतिक द्वंद्व को बखूबी उकेरती हैं। लेकिन, हिंदी में गुलजार ने ही वास्तव में बालमन को पढ़ा। 1972 की 'परिचय' में वे ऐसे परिवार की पड़ताल करते हैं जहां बच्चे वयस्कों की महत्वाकांक्षाओं के बीच कुचले जाते हैं। पिता किरदार के माध्यम से फिल्म पूछती है, बच्चों की भावनाओं को नजरअंदाज करने का खामियाजा कौन भोगेगा! वहीं, 1977 की 'किताब' मासूम बच्चे की आंखों से न्याय व्यवस्था की पड़ताल करती है।

गुलजार ने बालमन की महीन परतें खोली जैसे डर, दोस्ती और विश्वासघात। ये फिल्में आज भी प्रासंगिक हैं, खासकर जब कोविड के बाद बच्चों में चिंता विकार 30% बढ़ गए हैं (एनसीआरबी डेटा 2023)। मेहबूब खान की 1962 में आई फिल्म 'सन ऑफ इंडिया' बॉक्स ऑफिस पर असफल रही। लेकिन, राजेंद्र कुमार का गाया 'नन्हा मुन्ना राही हूं, देश का सिपाही हूं' आज भी बच्चों के देशभक्ति उत्सवों में गूंजता है। यह फिल्म राष्ट्र निर्माण के संदेश पर केंद्रित थी, बालमन पर नहीं। सत्येन बोस की 1964 की फिल्म 'दोस्ती' दो विकलांग लड़कों की मित्रता की कहानी है। धर्मेंद्र और फिरोज खान के साथ बच्चे कलाकारों ने इसे कालजयी बना दिया। फिल्म ने अपंगता को संवेदनशीलता से दिखाया, लेकिन बच्चा विशेष नहीं थी। राज कपूर की 'बूट पॉलिश' (1954) बाल श्रम और गरीबी पर तीखा प्रहार करती है। इसका आशय था दो अनाथ बच्चों की आंखों से समाज का आईना। वी शांताराम की 'तूफान और दिया' (1956) 'सन्यासी' और 'अनाथ बालिका' के स्नेह को छूती है। 1960 की 'मासूम' (मास्टर बाबूलाल निर्देशित) का गीत 'नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए' आज भी लोकप्रिय है। लेकिन, फिल्म बच्चों के सवालों को सतही रखती है। 'जागृति' (1954) बच्चों को शिक्षा और एकता का पाठ पढ़ाती है। 'हम लाए हैं तूफान से कश्ती निकाल के' आज भी स्कूलों में गाया जाता है। 'नन्हे मुन्ने' में बहन अपने भाइयों का पालन-पोषण करती है।

फिल्म 'मुन्ना' (1954) विधवा मां की आत्महत्या के बाद अनाथ बच्चे की व्यथा दिखाती है, जिसे चेतन आनंद ने 'आखिरी खत' (1966) में विस्तार दिया। शेखर कपूर की 'मासूम' (1983) विवाहेतर संबंधों से जन्मे बच्चे के पारिवारिक संघर्ष पर बनी फिल्म थी। नसीरुद्दीन शाह और सुप्रिया पाठक की अदाकारी इसे क्लासिक बनाती है। गोपी देसाई की 'मुझसे दोस्ती करोगे!' (1992) और अन्नू कपूर की 'अभय' (1994) सपनों की दुनिया को छूती हैं, लेकिन बड़े दर्शकों के लिए। नीतू सिंह की 'दो कलियां' (1958) बाल कलाकारों पर बनी, पर बच्चों के लिए नहीं थी। 21वीं सदी में बदलाव आया। 2005 में विशाल भारद्वाज की 'ब्लू अम्ब्रेला' हिमाचल की

एक लड़की की मासूमियत दिखाती है, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर नाकाम रही। आमिर खान की 'तारे जमीं पर' (2007) ने धमाल मचा दिया। डायलेक्सिया से जूझते उपेक्षित बच्चे ईशान की कहानी ने दर्शकों को रुला दिया। दर्शिल सफारी की निर्देशन और आमिर का अभिनय इसे मील का पत्थर बनाते हैं।

अमोल गुप्ते की 'आई एम कलाम' (2010) राजस्थानी गरीब लड़के की अब्दुल कलाम बनने की जद्दोजहद को प्रेरणादायक बनाती है। 'स्टेनली का डब्बा' (2017, अमोल गुप्ते) महाराष्ट्र के एक लड़के के डर को उकेरती है। बीआर चोपड़ा के पोते अभय चोपड़ा की फिल्म 'भूतनाथ' (2008) और 'भूतनाथ रिटर्न्स' (2014) संयुक्त परिवारों के टूटने पर हंसाते-रुलाते हैं। विशाल भारद्वाज की 'मकड़ी' (हालांकि मुख्य रूप से वयस्क, लेकिन बाल किरदारों की गहराई उल्लेखनीय) ने धारणाएं तोड़ीं। हाल के सालों में ओटीटी ने नई जमीन जोड़ी। 2019 की 'उड़ान' एक लड़के की उड़ान के सपनों को छूती है। 2021 की 'मिमी' (नेटफ्लिक्स) सरोगेसी के नैतिक सवाल उठाती है, लेकिन बच्चे केंद्र में नहीं। 'लक्ष्मी' (2020) और 'भूत पुलिस' (2021) जैसी हॉरर-कॉमेडी में बच्चे सहायक किरदार हैं। 2022 की 'जुग जुग जियो' में वरुण धवन का बेटा भावुक लम्हे देता है, लेकिन सतही। अनुराग कश्यप की 'घुंघरू' (2023, नेटफ्लिक्स शॉर्ट) एक लड़की के बाल विवाह के खिलाफ विद्रोह को क्रूरता से दिखाती है। तापसी पन्नू अभिनीत 'तड़ीपार' (2024, ओटीटी) अप्रवासी बच्चों की पहचान संकट पर है।

2025 की 'छोटा भीमः रेस्क्यू एडवेंचर' (ग्रीन गोल्ड एनिमेशन, नेटफ्लिक्स) एनिमेटेड है, जो कार्टून नेटवर्क से पर्दे पर आई। बच्चों के साहसिक सपनों को जीवंत करती है। फिर भी, असली बालमन की पड़ताल कम है। क्यों हम 'चिल्ड्रन ऑफ हेवन' (1997, माजिद मजीदी) जैसी नहीं बना पाए, जहां ईरानी भाई-बहन के जूते की तलाश जीवन का दर्शन बन जाती है या फ्रेंच 'रेड बैलून' (1956) की मासूम दोस्ती, 'व्हाइट बैलून' (1995) की बच्ची की इच्छा अंतरराष्ट्रीय सिनेमा बाल दर्शकों को गंभीरता से लेता है। जापान की 'माय नेबर टोटोरो' (1988) कल्पना की उड़ान देती है, 'स्पाइडर मैनः इंटू द स्पाइडरवर्स' (2023) विविधता सिखाती है। भारत में एनिमेशन बढ़ा छोटा भीम, मोटू पतलू लेकिन ये मनोरंजन है, गहराई नहीं। कारण है व्यावसायिकता। बॉक्स ऑफिस पर बच्चों की फिल्में 5% से कम कमाती हैं (जीक्यू इंडिया रिपोर्ट 2024)। निर्माता बड़े सितारे चुनते हैं।

कोविड ने बच्चों में मानसिक स्वास्थ्य संकट बढ़ाया। एनएचएम डेटा (2025) के मुताबिक 40% बच्चे चिंता से ग्रस्त है। फिल्में जैसे 'तारे जमीं पर' ने जागरूकता फैलाई, लेकिन नई फिल्में कम आई। ओटीटी ने मौका दिया और 'द वंडरफुल स्टोरी ऑफ हेनरी शुगर' (2023, नेटफ्लिक्स, वेस एंडरसन) छोटी कहानी में बाल जिज्ञासा छूती है। भारत में 'तितली' (2014) जैसे प्रयास हुए, लेकिन बेहद काम। अब ऐसी फिल्मों का भविष्य एनिमेशन पर टिका है और उम्मीद ओटीटी से है। 2026 में रिलीज होने वाली 'मिराई का सिनेमा' रीमेक या 'किड्स ऑफ द वर्ल्ड' जैसी परियोजनाएं बाल सशक्तिकरण पर हैं। लेकिन जरूरत है गुलजार जैसे संवेदनशील निर्देशकों की। बच्चों का सिनेमा बड़े बनने को तैयार है, बस, अब वयस्कों को बालमन समझना होगा। अन्यथा, यह हमेशा 'बच्चा' ही बना रहेगा!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

अरिजीत सिंह ने इसलिए शिखर पर छोड़ी सिंगिंग

अरिजीत सिंह करियर की पीक पर थे, बॉर्डर में गाना गाया और सलमान खान की फिल्म 'बैटल ऑफ गलवान' भी जल्दी रिलीज होने वाली थी। फिर ऐसा क्या हुआ कि अरिजीत सिंह ने अचानक बॉलीवुड को अलविदा कह दिया! हिंदी फिल्म इंडस्ट्री के मौजूदा सबसे बड़े सिंगर ने प्लेबैक सिंगिंग को अलविदा क्या कहा लोग हैरान हो गए। अपने अपने तर्कों के साथ इस संन्यास को लेकर लोग बातें कर रहे हैं। लेकिन, फाइनली इसका सही कारण अब सामने आ गया है। पता चल चुका है कि अरिजीत सिंह ने करियर के पीक पर बॉलीवुड को अलविदा क्यों कहा। दरअसल सिंगर का कहना है कि वो बोर गए थे।

अरिजीत सिंह काफी शांत स्वभाव के व्यक्ति हैं। अरिजीत सिंह इसे लेकर खुद ही खुलासा कर चुके हैं। उन्होने अपने ट्विटर अकाउंट पर लिखा था 'इंडस्ट्री छोड़ने के पीछे सिर्फ एक कारण नहीं है, बल्कि इसको लेकर लंबे समय से कोशिश जारी थी। मैंने

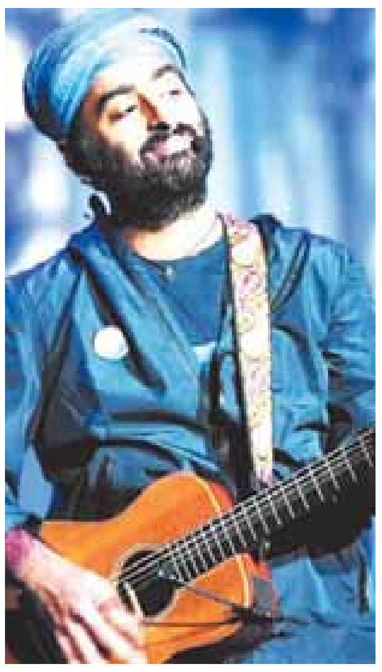

अब इसको लेकर हिम्मत जुटा ली है। अगर सिर्फ एक कारण की बात करें तो मैं काफी जल्दी बोर हो जाता हूं। वही गाने स्टेज पर परफॉर्म करता हूं, अरेंजमेंट्स अलग होते हैं बस। इसलिए मुझे बोरियत हो रही है। मैं कुछ अलग गाने करना चाहता हूं ताकि मैं जी सकूं। एक कारण ये भी है कि किसी नए सिंगर को उभरते हुए देख मोटिवेशन पाना चाहता हूं।' अरिजीत सिंह के खुलासे के बाद लोगों को संन्यास के कारण के जवाब मिल गए।

अरिजीत सिंह ने बीते दिन अपने संन्यास के ऐलान के साथ लिखा, ''नमस्कार, आप सभी को नए साल की हार्दिक शुभकामनाएं। मैं आप सभी श्रोताओं को इन वर्षों में इतना प्यार देने के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि मैं अब से प्लेबैक वोकलिस्ट के रूप में कोई नया काम नहीं लूंगा। मैं इस पेशे को छोड़ रहा हूं। यह एक शानदार सफर रहा।' इसके बाद अरिजीत के फैंस को जोर का झटका लगा है।

क्या परेश रावल की वजह से हेरा फेरी 3 में देरी

फिल्म 'हेरा फेरी 3' को लेकर फैंस एक्साइटेड हैं। फिल्म में अक्षय कुमार, परेश रावल और सुनील शेट्टी एक साथ आ रहे हैं। कुछ समय पहले परेश रावल ने प्रोमो शूट करने के बाद फिल्म बीच में छोड़ दी थी। उनके इस फैसले ने फैंस को शॉक्ड कर दिया था। अक्षय कुमार ने इस फ्रेंचाइजी के राइट्स भी खरीदे हैं। अक्षय कुमार भी उनके इस फैसले से शॉक्ड हो गए थे। हालांकि, फिर परेश रावल को फिल्म के लिए मना लिया गया और वो फिर से फिल्म में आ गए हैं। फिल्म की शूटिंग फरवरी या मार्च में शुरू होगी.

अब परेश रावल ने 'हेरा फेरी 3' को लेकर फिल्म की शूटिंग के डिले होने की खबरों पर रिएक्ट किया। उन्होंने कहा कि ये सब जो बीच में हुआ कि अक्षय कुमार ने मुझ पर 25 करोड़ का मुकदमा किया। ये देरी प्रोड्यूसर और अक्षय कुमार के बीच कुछ टेक्निकल इश्यू की वजह है। मेरा इससे कोई लेना देना नहीं है। जब उनके बीच चीजें ठीक होंगी, तो मुझे सिर्फ पेपर्स साइन करने हैं।

पिछले साल मई में परेश ने हेरा फेरी 3 से अलग होने की घोषणा की थी. इसके तुरंत बाद, अक्षय कुमार ने अपने बैनर केप ऑफ गुड फिल्म्स के जरिए फिल्म को प्रोड्यूस भी कर रहे हैं ने इस प्रोजेक्ट से जुड़ा एक मुकदमा दायर किया। हालांकि, बाद में परेश ने फिल्म में वापसी कंफर्म की। फिल्म को प्रियदर्शन डायरेक्ट कर रहे हैं। फिल्म का पहला पार्ट 2000 में रिलीज हुआ था। इस फिल्म में परेश बाबूराव गणपतराव आप्टे, अक्षय राजू और सुनील श्याम के रोल में नजर आए थे। उनके कैरेक्टर आईकॉनिक हो गए थे। फिल्म का दूसरा पार्ट 2006 में आया था।

अशोक जोशी

नायिकाओं की साड़ी, कभी ढंकी कभी उघाड़ी

साड़ी अकेला ऐसा पहनावा है, जिसे मूल रूप से हिन्दुस्तानी परिधान माना जा सकता है। भारतीय साड़ियों में वह आकर्षण है, जिसने पूरी दुनिया को अपनी तरफ आकर्षित कर रखा है।

साड़ियों को सात समंदर पार तक लोकप्रिय बनाने में सिनेमा की नायिकाओं का सबसे बड़ा योगदान है। यह बात अलग है कि इन नायिकाओं ने कभी अपना तन ढंककर शालीनता का परिचय दिया, तो कभी साड़ी के नाम पर छोटा सा कपड़ा लपेटकर अपने साथ साड़ी को भी शर्मसार किया।

सिनेमा के शैशवकाल में ज़्यादातर फ़िल्मों की कहानी सामाजिक बदलाव और बलिदान के ईर्द-गिर्द घूमती थी। इसके बावजूद फ़ैशन पर भारतीय और पश्चिमी, दोनों ही शैलियों का असर दिखता था। इन दोनों ही शैलियों के फ़ैशन को अभिनेत्री देविका रानी ने सबसे खूबसूरती से पेश किया। उनके चेहरे पर, हॉलीवुड की अभिनेत्रियों की तरह घुंघराली लटें झूलती थीं। वे छोटी आस्तीन और डीप कट वाले कंट्रास्ट रंगों के ब्लाउज़ पहनती थी। साड़ी पहनने का उनका अंदाज़ भी अलग था। वे साड़ियां इस तरह बांधती थीं जिससे शरीर दिखे भी और ढंका भी रहे। अपने जमाने से आगे और बोल्ड देविका रानी ने फ़िल्म कर्मा (1933) में चार मिनट लंबा चुम्बन दृश्य रचकर फ़िल्मी इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया था।

इसके बाद वाले दशक में नरगिस में महिलाओं की बेपरवाही दिखी, तो पुरुषों वाला बेफ़िक्र अंदाज़ भी दिखाई दिया। पतले बॉर्डर वाली साधारण साड़ियों के साथ नरगिस सादे, लेकिन स्वीटहार्ट नेकलाइन वाले ब्लाउज़ में नज़र आईं। हालांकि, साड़ी को वे इस तरह बांधती थी कि उनका डील-डौल पुरुषों जैसा नज़र आता था, जो उनके किरदार को बेहतर दिखाने में मदद करता था। उनके बाल सोचे-समझे तरीके से खुले छोड़े जाते थे, जिससे उनकी शख्सियत और उभरकर सामने आती थी। 'अंदाज़' में नरगिस, दिलीप कुमार और राज कपूर जैसे कलाकारों के साथ नज़र आईं। उस दौर में भी जब ये तीनों कलाकार एक फ्रेम में होते थे, दर्शकों की नज़रें नरगिस पर ही होती थीं। 'चलती का नाम गाड़ी' में जब पानी में भीगी मधुबाला अपने आंचल को निचोड़ती है, तो दर्शकों को दिल उछलने लगते थे।

साठ के दशक में भले ही वैजयंती माला ने 'संगम' से स्लीवलैस ब्लाउज़ की शुरुआत की हो, लेकिन उन्होंने बाजू-बंद का इस्तेमाल किया था। ऐसा यह दिखाने के लिए किया गया कि वे एक प्रशिक्षित नृत्यांगना हैं। वैजयंती माला का साड़ी पहनने का तरीका भी किसी अप्सरा से कम नहीं था। ऐसा लगता था जैसे कमर के पास साड़ी बेल्ट की तरह कसी हुई हो और उसके आंचल को कंधे पर लपेट दिया गया हो। वैजयंती माला पर फ़िल्म का गाना 'ओ मेरे सनम' फ़िल्माया गया। इस गाने में साड़ी वाले उनके लुक ने राज कपूर की इस पहली कलर फ़िल्म को और भी रंगीन बना दिया था। इसके बाद भी वैजयंती माला

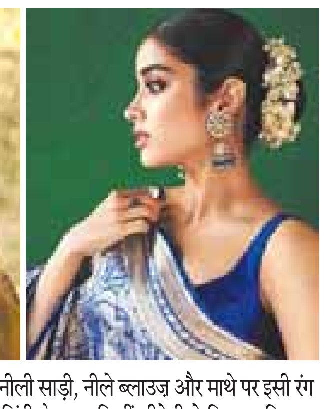

ने 'आम्रपाली' और 'सूरज' में कुछ इस अंदाज में साड़ी को अपने जिस्म से लगाया कि दर्शक आहें भरने लगते थे।

सह नायिका से नायिका की पायदान पर पहुंचने वाली मुमताज़ ने साड़ी पहनने का अंदाज़ बदल दिया। मुमताज ने यह साबित कर दिया कि साड़ी से शरीर की सुंदरता को कैसे उभारा जा सकता है। 'ब्रह्मचारी' के गाने 'आज कल तेरे मेरे' में पहनी गई नारंगी रंग की शानदार साड़ी ने मुमताज की खूबसूरती में चार चांद लगा दिए थे। इस गाने की खासियत यह थी कि मुमताज़ ने इसमें पश्चिमी शैली का बिंदास डांस किया था। ऐसा करके मुमताज़ ने यह संदेश दिया कि साड़ी पहनने का मतलब यह नहीं कि आप सहज होकर चल नहीं सकतीं। मुमताज़ के इस बेफ़िक्र अंदाज़ को काफ़ी पसंद किया गया और लोगों ने इसकी सराहना की। मोटे आईलाइनर, चेहरे से बड़े जूड़े और भारी गहनों वाले मुमताज़ के इस लुक ने बताया कि महिलाओं की अपनी एक अलग पहचान है. इसके अलावा, लोग उन्हें देखना और सुनना पसंद करते हैं।

साड़ी में सुंदरता को दिखाने की एक ऐसी ही कोशिश जीनत अमान ने 'सत्यम शिवम सुंदरम' में की थी। पश्चिमी शैली के फ़ैशन को भारतीय सिनेमा में लाने का श्रेय ज़ीनत अमान को जाता है। पर्दे पर ज़ीनत अमान बिकनी में इतनी बेफ़िक्र नज़र आती थीं कि उस दौर में भी कम कपड़े पहनना एक सामान्य सी बात हो गई थी। उस दौर में साड़ी देखने और पहनने को लेकर लोगों का नज़रिया हमेशा के लिए बदल गया, जब ज़ीनत ने आधे बदन को ढकने वाली साड़ी पहनी। चेहरे का कुछ हिस्सा बालों से ढका था, लेकिन सीने पर सिर्फ़ पतली सी साड़ी थी। इस सीन को इस तरह शूट किया गया कि साड़ी एक तरफ़ पवित्रता का प्रतीक दिखी, तो दूसरी तरफ़ इसे लोगों को रिझाने और बेचैन करने का ज़ज्बा दिखाया गया। यह कल्पना राजकपूर की थी, जिन्होंने नर्गिस से लेकर उनकी फिल्मों की तमाम नायिकाओं को साड़ी पहनाने के बावजूद अंग प्रदर्शन के लिए तैयार किया था। 'मेरा नाम जोकर' में पद्मिनी और 'राम तेरी गंगा मैली' की मंदाकिनी भी यह सब करती दिखाई दी।

'सिलसिला में रेखा बिना आस्तीन वाले ब्लाउज़ के साथ हल्के रंग की साड़ियों में नज़र आईं। साड़ी के बावजूद वे सैक्सी दिखाई देने में क़ामयाब रही। इस परम्परा को श्रीदेवी ने आगे बढाया। उन्होंने शिफ़ॉन की साड़ी को उस दौर का फ़ैशन बना दिया। हाथों में कांच की चूड़ियां, नीली साड़ी, नीले ब्लाउज़ और माथे पर इसी रंग की बड़ी बिंदी के साथ दिखीं श्रीदेवी ने दिखाया कि इस तरह की सुंदरता सिर्फ़ रंगों के साथ किए जाने वाले ऐसे प्रयोगों से ही मिल सकती है। 'चांदनी' (1989) में श्रीदेवी पीले रंग की शिफ़ॉन साड़ी में नज़र आई थीं।

फिल्मों में साड़ी की गरिमा बढ़ाने वाली नायिकाओं में माधुरी दीक्षित का नाम भी उल्लेखनीय है। 'हम आपके हैं कौन' (1994) में माधुरी दीक्षित के पहनावे को ऐना सिंह ने डिज़ाइन किया था। यह ऐसा डिज़ाइन था, जो फ़ैशन के इतिहास में दर्ज हो गया। खूब सारी कढ़ाई वाली बैकलेस चोली ने साड़ी से सबका ध्यान अपनी ओर खींच लिया। यह लुक इतना लोकप्रिय हुआ कि आज भी नई दुल्हनें, दर्ज़ी से बिल्कुल उसी स्टाइल का ब्लाउज़ बनाने की डिमांड करती हैं। 'बेटा' में भी माधुरी साड़ी पहने धकधक करते हुए दर्शकों के दिल की धड़कन बढ़ाती रही। सदी के आखिरी दशक में साड़ी को नए तरीके से पेश किया गया। 'कुछ कुछ होता है' में काजोल मशीनों से चलाई गई हवा में उड़ती साड़ी के साथ नज़र आई। इस दौर में लम्बी और छरहरी शिल्पा, सुष्मिता सेन और ऐश्वर्या राय के करीब हर किरदार को साड़ी की मदद से प्रभावशाली दिखाया गया है। इसमें भी ऐश्वर्या का पलड़ा सबसे भारी रहा। 'हम दिल दे चुके सनम' से लेकर 'देवदास' में साड़ियों ने हमेशा ऐश्वर्या की खूबसूरती को और बढ़ाया है। साथ ही, उनके किरदार को एक समझदार और संवेदनशील महिला के तौर पर पेश किया। 'दोस्ताना' के 'देसी गर्ल' गाने में, प्रियंका चोपड़ा का लुक ऐसा था जैसे कह रहा हो कि अगर आपने बेहतरीन फ़िगर पाया है, तो इसे दिखाओ। यह कॉकटेल साड़ी का नया वर्शन था, जिसमें पूरब के साथ पश्चिमी फैशन का घालमेल था जिसने पुरानी सभी स्टाइल को पीछे छोड़ दिया।

'ये जवानी है दीवानी' में दीपिका पादुकोण ने 'बदतमीज़ दिल' गाने में जिस तरह की साड़ी पहनी उसने कसरत वाले फ़िट फ़िगर को दिखाने का चलन शुरू कर दिया। ऐसी साड़ी जो पारदर्शी थी, कमर के निचले हिस्से से बांधी गई और जिसे हमेशा ब्रालेट स्टाइल ब्लाउज़ के साथ पहना गया। इन पर सीक्विन का काम होता था और साथ में होता था ज़बान पर चढ़ जाने वाला गाना। साड़ी के ज़रिए सेक्सी दिखने का यह एक नया तरीका था। गुजरे जमाने में जहां नरगिस, माला सिंन्हा, मधुबाला, राखी, जया बच्चन आशा पारेख, नूतन और वहीदा रहमान ने साड़ी का मान रखा, वहीं इन दिनों कृति सेनन, कंगना जैसी नायिकाओं पर साड़ियां खूब फबती हैं। यह बात अलग है कि इन दिनों नायिकाएं साड़ियों में कम ही नजर आती हैं।

मुफ्त का चंदन (मत) घिस मेरे नंदन!

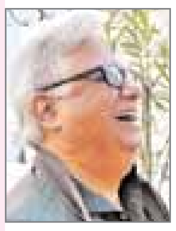

प्रकाश पुरोहित

जैसे 'दान की बछिया' का डेंचर नहीं देखा जाता ना, उसी तरह जब कोई मुफ्त में संगीत-समारोह दिखा और सुना रहा है तो फिर उसकी बुराई का अधिकार आप खो देते हैं। अगर आलोचना का इतना ही कीड़ा काट रहा है तो ऐसे मुफ्त के आयोजन में जाएं ही नहीं, और जाएं तो जो भी मूर्खताएं वहां हो रही हैं, उसे हजम करें और मुंह बांध कर बैठे रहें।

कोई प्रायोजकों की दाढ़ी या गाल या चरण आखिर क्यों सहलाता है, इसीलिए ना कि उसके शो में कंजूस लोग टिकट खरीद कर तो आएंगे नहीं, इसलिए जो वसूली जनता से नहीं हो सकती है, प्रायोजकों से कर लेते हैं। आगे की लाइन में सोफे में धंसे लोग देख कर ही अनुभवी फोकटिए समझ जाते हैं कि अपने बदले का खर्चा इस जमात ने ही उठाया है। आगे कोई बैठने की इसलिए भी नहीं सोचता है कि कौन मुफ्त में बदनामी ले। गलती से बैठ गए तो आगे ना जाने कितने और आगे बैठने आ जाएंगे। खीसे में नकद होता तो मुफ्त के इस औपचारिक समारोह में क्यों हाजिरी देते।

फोकट के आयोजन में चूंकि समारोह की गरिमा का तो कुछ लेना-देना होता नहीं है तो नेतागीरी को भी जगह मिल जाती है। अच्छी बात ये है कि ये देर से आते हैं और जल्दी विदा भी हो जाते हैं। ना इन्हें सुनना होता है और ना बुलाने वाले की मंशा भी सुनाने की रहती है। दोनों के विचार मेल खा जाते हैं और चीफ गेस्ट का झंझट भी खत्म हो जाता है। नेता के साथ यह भी खूबी रहती है कि बंदा कभी अकेले नहीं आता है। पूरा रेवड़ साथ आता है और साथ ही चला भी जाता है। ये धुन के पक्के लोग और कुछ देखते या सुनते नहीं हैं, बस, नेता ही इनका लक्ष्य होता है, परछाई की तरह साथ चलते हैं। इसलिए भीड़ की कमी भी समारोह की शुरुआत में महसूस नहीं होती।

मुफ्त में सुनाने के खतरे तो नहीं पता, लेकिन फायदे बहुत हैं कि बर्दाश्त करने की हद तक बैठ सकते हैं। आप उठ कर तो जा सकते हैं, लेकिन बुराई का मौलिक अधिकार खो चुके होते हैं कि टिकट तो खरीदा नहीं था। सुनकार हर बार यही आशंका ले कर चलते हैं कि क्या मालूम, इस बार कुछ ढंग का हो ही जाए, लेकिन यह नहीं सोचते कि यदि ढंग का कर सकते तो मुफ्त में क्यों बुलाते, टिकट नहीं रखते। मतलब साधने के लिए मुफ्त के समारोह करने वाले जानते हैं कि दस रुपए भी टोकन-टिकट रख दिया तो प्रायोजकों के अलावा कोई फटकेगा नहीं।

ऐसा भी नहीं है कि मेहमान कलाकार ही बुलाए जाते हों और उन्हें ही मुफ्त के श्रोता पेश किए जाते हों। हौसला अफजाई के लिए खुद भी मंचासीन होने से डरते नहीं हैं। आने वाले की भी हिम्मत बंधती रहती है कि मारल सपोर्ट तो दे रहा है बंदा! 'कहां ला कर फंसा दिया' वाला भाव मन में नहीं आता है मेहमान के। अब कोई टिकट से आयोजन करे तो यह ध्यान रखना पड़ता है कि पाए के कलाकार देख कर ही लोग पैसे ढीले करेंगे। यहां तो कोई एक भी अच्छा फंस गया तो बाकी खोटे भी दौड़ने लगते हैं।

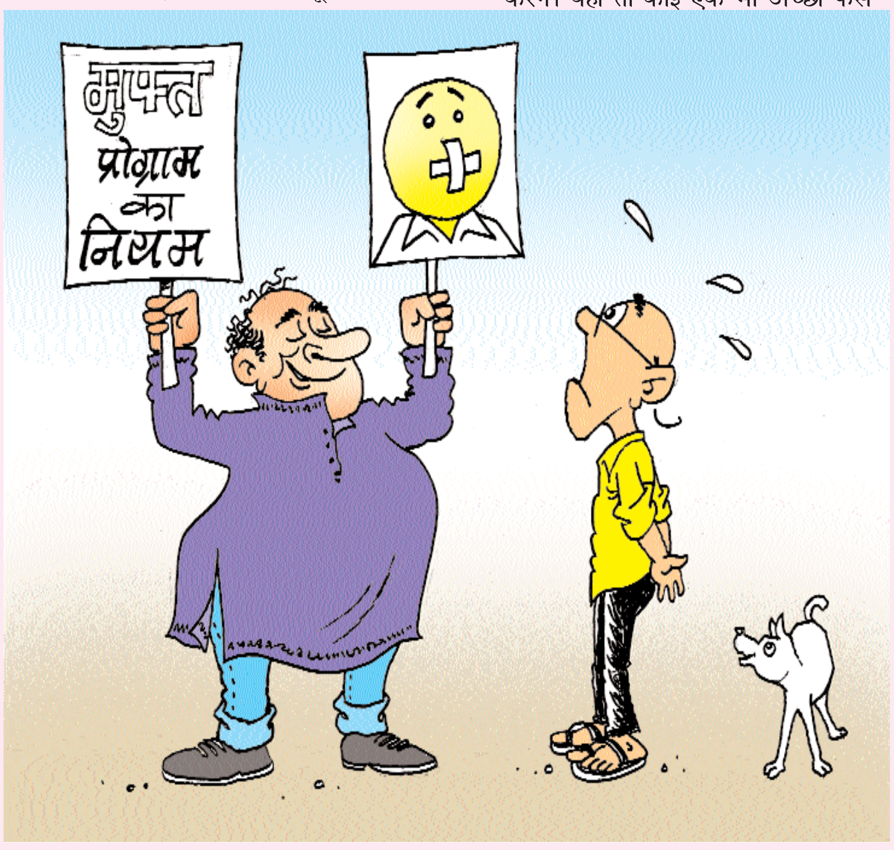

टिकट से संगीत-समारोह बड़ा विकट होता है कि फिर लोगों को मीन-मेख निकालने का 'नागरिक अधिकार' मिल जाता है। कुछ तो टिकट लेते ही इसलिए हैं कि अच्छे-भले प्रोग्राम की बखिया उधेड़ दें। 'खाया-पीया कुछ नहीं और गिलास तोड़ा बारह आने' वाली कहावत चरितार्थ हो जाती है। होते होंगे कुछ नासमझ, जो टिकट के दम से आयोजन करते होंगे कि उन्हें बुराई या आलोचना की फिक्र नहीं होती होगी, लेकिन जिसके पास कुछ ना हो, वह बुराई कैसे बर्दाश्त कर सकता है भला।

फिर यह एहसान भी तो हो जाता है कि हमने मुफ्त में दिखाया, सुनाया है। चाहते तो टिकट भी रख सकते थे, लेकिन कमाई से ज्यादा मीन-मेख का डर रहता है कि टिकट बेचा नहीं कि गई भैंस पानी में। फोकट के आयोजन के बारे में इतना कुछ इसलिए समझ आया कि पिछले दिनों शहर में संगीत समारोह के पितृ-पुरुष से जब पूछा कि समय क्या है तो उनका जवाब था, इस बार भी टिकट नहीं रखा है, लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि बाहर निकल कर बुराई करने लगें। मुफ्त में प्रोग्राम देखने के कुछ नियम-कायदे होते हैं और पहला यही होता है कि चुप रहें और बोर होने लगें तो पीछे से उठ कर चलते बनें। यकीन जानिए, पूरे दो दिन यानी रात, खुद को खूब कोसा।

मेरा शहर, मेरी नजर

सुनील कुमार गुप्ता

लेखक पत्रकार हैं।

मेरे अहसासों का इकबाल मैदान, जम्हूरियत और शाहीन जिसकी शान

भोपाल शहर में पला-बढ़ा और गढ़ा हूं। सारी तरबियत यहीं हुई, यहीं ख़्वाब बुने, कुछ पूरे हुए, कुछ की अधूरी कहानी है। लिहाजा इसकी मिट्टी, उसकी खुशबू, उसकी तासीर, उसकी रवायतों, इतिहास से मुझे बेपनाह मोहब्बत और फ़ख्र है। यह फ़क्र शर्मिंदा भी हुआ है, जब दंगों की शक्ल में फिरकापरस्ती के दाग लगे, मेरा घर भी जला, ख़ैर, ये कहानी फिर कभी। कभी गलियों, गालियों, गप्पों के लिए मशहूर और आपसी अखलाक को अपने दामन में समेटे मेरे इस शहर की झील, उसका पानी, लहरें और हवाएं जैसे सबको एकरस, एकजस अहसास के साथ सबको मिलती हैं, वैसा ही मेरा अहसास और जुड़ाव भोपाल के इकबाल मैदान (जो एक ज़माने में बहुत सारे खिरनी के पेड़ होने की वजह से 'खिरनी वाले मैदान' के नाम से जाना जाता था।) से है। मेरे लिए यह सिर्फ एक खुला मैदान नहीं, बल्कि उस गोद की तरह है, जहां इंसाफ और बराबरी के लिए जम्हूरियत की आवाज़ों और इंसानियत को जगह मिली।

हाल ही कुछ युवा साथियों के साथ भोपाल की ख़ाक छानने-जानने का सिलसिला शुरू करने का प्लान बना। गुज़रे इतवार को अलसुबह इक़बाल मैदान से ताज-उल-मस्जिद तक घुमक्कड़ी पर निकल पड़ी टोली। उस वक्त आसमान में सूरज की लालिमा दस्तक दे रही थी। हम इकबाल मैदान के भीतर घूम रहे थे, उसकी लाल पत्थर वाली चारदीवारी को छू रहे थे, कभी मैदान पर बचे इकलौते पेड़ को सहला रहे थे, तो कभी 'शाहीन' को निहार रहे थे। कभी स्तम्भ पर अल्लामा इक़बाल का लिखा गीत- 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा' गा रहे थे, कभी राम, चिश्ती और गुरूनानक देव पर लिखे उनके शेर पढ़ रहे थे। जैसे-

हे राम के वजूद पे हिन्दोस्तां को नाज़, अहल-ए-नज़र समझते हैं उसको इमाम-ए-हिंद।

या

चिश्ती ने जिस जमीं पर पैग़ाम-ए-हक सुनाया, नानक ने जिस चमन में वहदत का गीत गाया,

मेरा वतन वही है-मेरा वतन वही है।

जिस अल्लामा इक़बाल ने मुल्क से मोहब्बत, इंसानियत, भाई-चारा और सभी धर्मों और उसके रहनुमाओं को बराबर का सम्मान देने वाली जो शायरी की है, उसी अल्लामा इक़बाल को लेकर फिरकापरस्तों की एक जमात ने कितनी गंध फैलाई है। यह अलग बात है कि फिर भी इक़बाल के बुलंद इक़बाल को कमजोर नहीं कर पाए।

इक़बाल अपनी शायरी में परिंदा 'शाहीन यानी बाज़' को एक मिसाल के रूप में देखते थे, वो लिखते हैं-

तू शाहीन है परवाज़ है काम तेरा, तेरे सामने आसमां और भी है।

शायरी की इसी मिसाल को नौजवानों के लिए एक बड़ा संदेश मानते हुए इकबाल के सम्मान में देश के प्रख्यात चित्रकार, कवि जगदीश स्वामीनाथन ने कलात्मक आकार दिया था। वह शाहीन भी इकबाल मैदान के एक स्तंभ पर मौजूद है। एक वक़्त इस शाहीन को लेकर भी लोगों ने उसकी लागत से लेकर चील, कौवा, गिद्ध न जाने क्या-क्या कहते हुए मजाक उड़ाया था और बखेड़ा खड़ा किया था।प्रख्यात चित्रकार मकबूल फिदा हुसैन ने ख़ास धातु के बने इस शाहीन का लोकार्पण किया था। ये वो दौर था, जब बहुकला, सांस्कृतिक केन्द्र भारत भवन का दुनिया भर में डंका बज रहा था।

मैदान की दरो-दीवार पर इकबाल के और भी कई शेर नुमाया हैं और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, डॉ. ज़ाकिर हुसैन, जमनालाल बजाज के भोपाल आने के बारे में काफी कुछ लिखा हुआ है। जी हां, वही जमनालाल बजाज, जिन्हें गांधीजी अपने बेटे की मानिंद मानते थे और जिनके आग्रह पर गांधी जी साबरमती आश्रम से वर्धा के सेवाग्राम आकर बस गए। आजादी की बाकी लड़ाई का यहीं से लड़ी गई। इतिहास को टटोलें तो पता चलता है कि अल्लामा इकबाल 1931-36 के बीच 4-5 बार भोपाल आए तो और यहां रहे भी थे और शायरी भी की थी। बाद के दौर में उन्हीं के सम्मान में 'खिरनी वाले मैदान' का नाम 'इक़बाल मैदान' रखा गया।

मैं इकबाल मैदान से कोई पहली बार बावस्ता नहीं था, तमाम सियासी-गैरसियासी, छात्र-मजदूर, किसान आंदोलनों, जनगीतों और नाटकों की रिहर्सल, कवि सम्मेलनों, मुशायरों जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अलावा इफ्तार पार्टियों में शिरकत, भोपाल गैस कांड के दौरान सैकड़ों-हजारों मुसीबतों के मारों को पनाह की यादें इस मैदान से जुड़ी हैं। जैसे भूख मंदिर-मस्जिद, जात-पात, फिरका नहीं देखती है, वैसे ही आज भी यहां किसी भी भूखे को बिना दाम चुकाए भरपेट रोटी मिल जाती है और हर बेआसरा को रात के वक्त मैदान अपने आगोश में समेट कर पनाह भी देता है। दिन उगने से लेकर ढलने तक और रात की रौनक मद्धम पड़ने तक रहगुजर से आबाद रहता है और अपने अपने चारों ओर रेहड़ी वालों को जगह देकर उनकी रोजी-रोटी का जरिया बनता है।

भोपाल रियासत के दौर में शौकत महल, शीशमहल, रियाज मंजिल जैसी इमारतों के बीच आंगन की तरह इस्तेमाल होने वाले और सदर मंजिल के बेहद करीब इस इकबाल मैदान से एक रूहानी रिश्ता इसलिए भी महसूस करता हूं, क्योंकि मैं इसे केवल एक खुला मैदान नहीं मानता हूं, बल्कि इसे सियासी, समाजी और मजहबी संवाद का एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल के रूप में देखता रहा हूं। रियासत के दौर में भले ही यह सबके नहीं खुला था, लेकिन भोपाल के विलीनीकरण, अंग्रेजों के खिलाफ और मुल्क की आजादी समेत पूरी दुनिया में साम्राज्यवादी ताकतों से परेशान मुल्कों के हक़ो-हक़ूक़ के लिए भोपालियों के साथ खड़े होने से आंदोलनों को यहीं पर आवाज़ मिली। इसी मैदान ने यह अहसास कराया कि कोई सावर्जनिक स्थल सत्ता से सवाल पूछने और सबको इंसाफ मिले, बराबरी का दर्जा मिले, इसकी खोज के मंच भी हो सकते हैं। महिला अधिकारों और लैंगिक समानता को लेकर सभाएं, अल्पसंख्यकों के नागरिक अधिकारों से जुड़े प्रदर्शन यहां हुए हैं। बहरहाल यह अब गुजरे जमाने की बात हो गई। भोपाल में 2020 में सीएए-एनआरसी के खिलाफत आंदोलन के बाद से इस जगह पर कोई बड़ी आवाज उठी हो, याद नहीं आता, क्योंकि यहां सरकार ने किसी भी जलसे-जुलूस के लिए मंजूरी देना बंद कर दिया है।

बहुत कम लोगों को मालूम होगा, कि यहां इकबाल मैदान के मंच के नीचे तलघर में भोपाल की पहली लायब्रेरी है, जिसका नाम इकबाल लायब्रेरी है। एक दशक पहले तक यह लायब्रेरी महफ़ूज़ थी। यहां उर्दू, फारसी, संस्कृत, हिन्दी साहित्य की तकरीबन डेढ़ लाख से ऊपर किताबें हुआ करती थीं, लेकिन लायब्रेरी उस वक्त बर्बाद हो गई, जब 2017 के अगस्त महीने हुई बारिश का पानी लायब्रेरी में भर गया और आधी से ज्यादा किताबें खराब हो गईं। बाद में बची किताबों को नगर निगम की लायब्रेरी में सहेजने की कोशिश की गई थी।

अभी मैदान का पुरसाने हाल यह है कि यहां मैदान में एक बचा दरख़्त उदास है। मैदान से हरियाली गायब है और इक़बाल स्तंभ के चारों ओर कचरा और गंदगी है। मैदान के एक तरफ बाहरी हिस्से में कार मैकेनिकों के गैराज हैं, कबाड़ गाड़ियां पड़ीं हैं और बाकी हिस्से में दुकानदारों के अतिक्रमण है। मैदान पर एक जुल्म तब हुआ था, जब इसके सौंदर्यीकरण के नाम पर सारे खिरनी के पेड़ काट डाले गए थे, अब मैदान पर स्थानीय लड़के क्रिकेट का बल्ला-गेंद लेकर जोर-आजमाइश करते दिखते हैं। मैदान के चारों ओर भीड़ तो कयामत की है, लेकिन मैदान अकेला लगता है, उदास है। आप भी जाएं, इक़बाल और इक़बाल मैदान के वक्त के बदलाव को महसूस करें, मन करे तो आंसू बहाएं या आवाज उठाएं, जोर से चिल्लाएं, शायद कोई हलचल हो।

विचार

बंशीलाल परमार

लेखक प्रख्यात फोटोग्राफर हैं।

आपके नाम वारंट है, चलिए थाने

दोपहर का खाना खाकर मैंने हाथ धोये ही थे कि मुख्य द्वार के चैनल खटखटाने की आवाज आई । गेट खोल कर बाहर निकला तो देखा कि एक पुलिस कांस्टेबल खड़ा था। मुझे देखते ही, वह कड़क आवाज में बोला, आपका अरेस्ट वारंट है। मैं घबराया कहीं फेसबुक पर उटपटांग लिखने से कोई अरेस्ट करने तो नहीं आ गया? मैंने संयत होकर कहा किस नाम से वारंट है? उसका स्वर विनम्र और दयनीय हो गया और बोला, 'आपकी ओर से कुछ हो जाए!'

यह कहते हुए उसने रजिस्टर आगे बढ़ा दिया। मैं समझ गया कि वह बहुरुपिया है। मैंने पूछा, आपका नाम। जवाब आया, लालुराम। मैंने पूछा, कहां रहते हो। जवाब में मंदसौर के पास किसी गांव का नाम लिया। मैंने श्रद्धानुसार राशि दी। वह दुआ देते हुए चला गया। मैं अपने अतीत में खो गया। जब मैं अपने पैतृक कस्बे गंगधार में रहता था। तब बहुरुपया के गांव में आने समाचार मिलते ही खुश हो जाते थे। वे सप्ताह भर अलग-अलग स्वांग बनाकर जनता का मनोरंजन करते। हम बच्चे बहुरुपिए के पीछे गांव, मोहल्ला नाप लेते। कभी बंदर बनकर आता कभी डाकू, कभी पुलिस तो कभी मजनू बन कर। आखिर दिन सेठ-मुनीम का वेश धर कर अपना मेहनताना लेता था, विनय पूर्वक।

अभी कुछ दिन पहले इंदौर में करोड़पति भिखारी के बारे में पढ़ा, जो बिना कला के करोड़पति बन गया। आए दिन हम किन्नरों द्वारा जबरन वसूली और मारपीट के समाचार पढ़ते हैं लेकिन लोककलाकार के प्रति हमारी संवेदनाएं जो होनी चाहिए वो नहीं है। आज समय ने मंनोरंजन के विभिन्न साधनों ने, मोबाइल और रील ने बची खुची कसर निकाल दी। ये बहुरूपिए वेषभूषा, अभिनय, मेकअप और संवाद के जरिए किरदार का स्वरुप हमारे सम्मुख रखते हैं। आज समाज में जनप्रतिनिधि बहुरुपिए बनकर जनता को मूर्ख बनाकर सात पुस्तसें का धन एकत्र करते हैं। वहीं प्राचीन समय से समाज से जुड़े लोक कलाकारों को उपेक्षा झेलनी पड़ रही है। ये लोककलाकार आज रोजी रोटी के लिए जीवन संघर्ष कर रहे हैं। जब भी ये आपके द्वार आए इनकी कला का सम्मान करें, यथोचित मानदेय दें। इन्हें भिखारी की दृष्टि से नहीं अपितु कलाकार की दृष्टि से देखे।

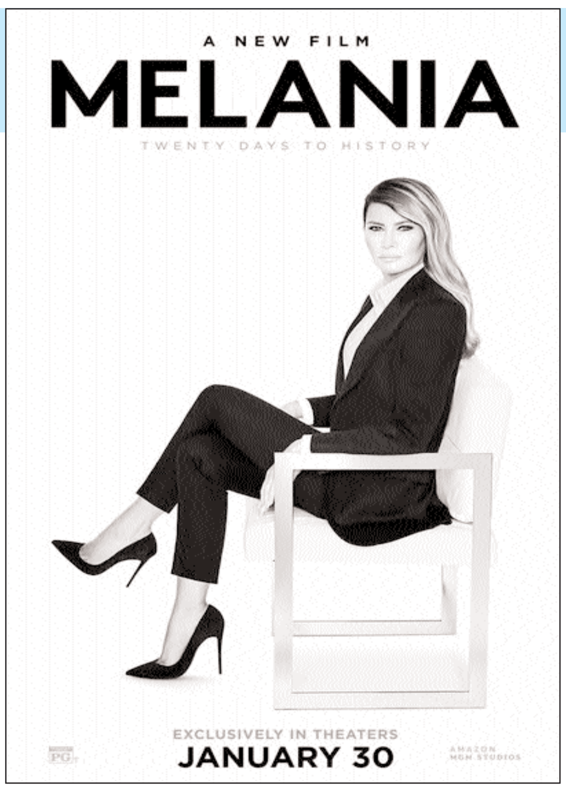

दुनिया की बेरहमी को भेदती कोशिश...!

❐ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

ट्रंप के बारे में नई डॉक्यूमेंट्री 'मेलानिया' पंद्रह सौ थिएटरों में दिखाई जाएगी। यह फिल्म बीस दिन तक मेलानिया को रिकॉर्ड करती है, लेकिन कोई ऐसी जानकारी नहीं मिलती, जो इसे देखने की वजह बने। डोनाल्ड ट्रंप के दूसरी बार राष्ट्रपति शपथ समारोह की इंचार्ज मेलानिया हैं, लेकिन कुछ नहीं पता, सिवाय इसके कि बॉल में सोने का अंडा होगा, जिसे प्लेट में रखा जाएगा। फर्स्ट लेडी के पास इसके बारे में कोई नोट्स नहीं हैं। इसे किसने रखा है, क्या यह सच में खाने लायक है, क्या इसके साथ कुछ और अच्छा हो सकता है, इसके रंग की मंजूरी के अलावा।

फिल्म में दिखाए बीस दिनों में से एक दिन जिमी कार्टर के अंतिम संस्कार में और एक दोपहर आर्लिंग्टन कब्रिस्तान में यादगार समारोह में बिताया गया। पहले दिन की पूरी कवरेज मां के शोक पर है, जिनकी मौत सालभर पहले उसी दिन हुई थी। इसमें लंबा सीन है, जिसमें वह न्यूयॉर्क में सेंट पैट्रिक कैथेड्रल बुक करती है, ताकि शांति से घूम सके। पत्थर जैसे गार्ड और मुस्कुराते पादरी उसे देख रहे होते हैं। कब्रिस्तान में वह माफिया जैसी दिखती है और अजनबियों को देखकर खास तौर पर सिर हिलाती है। न मुस्कुराती है, न कोई दिल खोल कर बात करती है, न परिवार के रिश्ते समझ आते हैं, न वो इंसान के तौर पर परदे पर आती है। फिल्म में दिखाया है कि कैसे वह इनॉगरेशन वॉर्डरोब के लिए कई फिटिंग करवाती है, वीकेंड प्लान करती है और व्हाइट हाउस स्टाफ के साथ कुछ मीटिंग करती है।

कुछ खास मौकों पर ही मेलानिया और डोनाल्ड ट्रंप को साथ दिखाया है। उनके बीच फोन कॉल हैं, लेकिन साथ में कोई डिनर या बातचीत नहीं होती। शुरुआती सीन से ही यह साफ है कि मेलानिया के लिए उनकी छवि सबसे जरूरी है। मेलानिया उर्फ मिसेज ट्रंप पर ज्यादा कंट्रोल था, जिसमें मिस्टर ब्रेट रैटनर (फिल्म डायरेक्टर) को चुनना भी शामिल था, जो ऐसे फिल्म मेकर हैं, जिन पर छह महिलाओं ने यौन अपराध का आरोप लगाया था। हॉलीवुड में रैटनर ने काम नहीं किया था।

खैर, उन्होंने किसी भी गलत काम से इनकार किया, लेकिन इनके कहने भर से क्या होता है। रैटनर ने इस फिल्म से बता दिया कि जिस डायरेक्टर ने 'रश ऑवर' जैसी फिल्में बनाईं, किस हद तक समझौता कर सकता है। फिल्म में मेलानिया अभी भी मां के दुःख में अकेली हैं। डॉक्यूमेंट्री मिसेज ट्रंप की कामयाबियों की लंबी लिस्ट के साथ खत्म होती है, असल में एक्शन में नहीं दिखाई गई है। यह तो बिलकुल नहीं बताती कि मेलानिया कौन हैं, लेकिन यह जरूर बताती है कि वह कैसी दिखना चाहती हैं।

लंदन में इस फिल्म को पहले दिन देखने वाले नहीं मिले, कई जगह शो कैंसिल हो गए या इक्के-दुक्के ही देखने आए। डोनाल्ड ट्रंप ने इंस्टाग्राम और सोशल मीडिया पर व्हाइट हाउस समारोह की तस्वीरें पोस्ट कीं और कहा कि फिल्म जरूर देखें, टिकट तेजी से बिक रहे हैं! पता चलता है कि मिस्टर और मिसेज ट्रम्प अपनी ख्यालों की दुनिया में ही रहते हैं, उनका बाहरी दुनिया से कोई नाता नहीं है, क्योंकि यहां तो कैमरा भी वो नहीं दिखा पाया, जो दिखाना था।